मार्च-२०१७ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मार्च-२०१७

नारी का सम्मान,
सिखाता है सत्यार्थप्रकाश।
साम्राज्ञी है वो घर-घर की ,
करती सदा उजास।
नारी के यदि आँसू निकले,
राष्ट्र का है दुर्भाग्य।
जहाँ सुखी सन्तुष्ट है नारी
वह सबका सौभाग्य।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१० ६३

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Pav Bhaji masala
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित


न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**

महाशय धर्मपाल जी ( एम.डी.एच. )

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमांसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग**

नवनीत आर्य ( मो.9314535379 )

**व्यवस्थापक**

सुरेश पाटोदी ( मो.9829063110 )


| सहयोग ◆ | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक - | ११००० रु. | $ 1000 |
| आजीवन - | १००० रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय - | ४०० रु. | $ 100 |
| वार्षिक - | १०० रु. | $ 25 |
| एक प्रति - | १० रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११७ फाल्गुन शुक्ल दशमी विक्रम संवत् २०७३ दयानन्दाब्द १९२


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।



March - 2017

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | २००० रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | १००० रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | ७५० रु. |



| | | |
|---|---|---|
| स मा चा र | २६ | ०४ वेद सुधा |
| | | ०५ सुधारों का सर्वव्यापी स्वागत हो |
| | | ०६ निष्कलंक दयानन्द |
| | | १० यजुर्वेद में पशु पालन |
| | | १४ होलिकोत्सव |
| | | १७ दलित कौन? |
| ह ल च ल | २७ | २१ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/१७ |
| | | २२ आम बजट २०१७ |
| | | २४ कल्पना की कहानी कल्पना से परे |
| | | २८ स्वास्थ्य- आयुर्वेद और स्वास्थ्य |
| | | २९ कथा सरित- बदलाव |
| | | ३० सत्यार्थ पीयूष- राजा की दिनचर्या |



स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - १०

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१

(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७६, ०९८२९०६३११०

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्




# वेद सुधा

## परम जातवेदा मुझे श्रद्धा और मेधा देवे

**अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे।**
**स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु।।** - अथर्व. १९-६४-१

ऋषिः- ब्रह्मा।। देवता- अग्निः।। छन्दः- अनुष्टुप्।।

जब समिधा अग्नि में डाली जाती है तो वह जल उठती है, अग्निरूप हो जाती है, समिधा में छिपी अग्नि उद्बुद्ध हो जाती है, प्रदीप्त अवस्था में आ जाती है। इसीलिए वैदिक काल के जिज्ञासु लोग समित्पाणि होकर (समिधा हाथ में लेकर) गुरु के पास आया करते थे, अपने को समिधा बनाकर गुरु के लिए अर्पित कर देते थे, जिससे कि वे अपने गुरु की अग्नि से प्रदीप्त हो जावें। उस वैदिक विधि के अनुसार मैं भी अपने आचार्य के चरणों में उपस्थित हुआ हूँ और उनकी अग्नि द्वारा उन-जैसा प्रदीप्त होना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि प्रदीप्त हो जाना बड़ा कठिन है। प्रदीप्त होने से पहले अपने को जला देना होता है और यह अपने को जला देना तभी किया जा सकता है जब मुझमें पूर्ण श्रद्धा हो कि इस जलने के द्वारा मैं अवश्य प्रदीप्त व ज्ञानमय हो जाऊँगा। इसलिए पहले तो मुझमें श्रद्धा की आवश्यकता है। इसी प्रकार गीली होने आदि किसी दोष के कारण यदि समिधा अग्नि को धारण न करे, तो भी वह प्रदीप्त नहीं हो सकती। इसलिए मुझमें ज्ञान के धारण करने वाली बुद्धि, मेधा की भी आवश्यकता है। श्रद्धा और मेधा के बिना मैं कभी ज्ञान से दीप्त नहीं हो सकता, पर इस श्रद्धा और मेधा को मैं और कहाँ से लाऊँ? मैं तो इन 'जातवेदाः' अग्नि से, अपने आचार्यदेव से ही प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे श्रद्धा और मेधा का दान प्रदान करें। वे जातवेदा हैं, उन्हें ज्ञान हो चुका है, वे ज्ञान की जलती हुई अग्नि हैं, अतः वे 'जातवेदा' यदि चाहें तो मुझे श्रद्धा और मेधा भी दे सकते हैं।

अन्त में मैं प्रातः-सांय भौतिक अग्नि के लिए अपनी जो काष्ठ की समिधा लाता हूँ, शिष्यरूप में आचार्याग्नि के लिए अपने शरीर-मन-आत्मा के प्रदीपनार्थ जो तीन समिधाएँ प्रतिदिन लाता हूँ, राष्ट्रसेवक या धर्मसेवक बनकर राष्ट्राग्नि या धर्माग्नि आदि के लिए जो तदुपयोगी समिधाएँ लाता हूँ, ये सब-की-सब समिधाएँ अन्त में उस 'बृहत् जातवेदाः' के लिए, उस सब-कुछ जानने वाले महान् अग्नि के लिए लाता हूँ जो सब आचार्यों का आचार्य है, सब अग्नियों का अग्नि है, परम-परम अग्नि है और अन्त में उसी 'बृहत् जातवेदाः' से श्रद्धा और मेधा की याचना करता हूँ जोकि परम श्रद्धामय है और मेधा का भण्डार है।

शब्दार्थ- अग्ने = हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! बृहते=बहुत बड़े, परम जातवेदसे =जातमात्र के जाननेवाले, ज्ञानयुक्त आपके लिए मैं समिधम्=समिधा को, प्रदीपनीय वस्तु को, आहार्षम्=आहरण करता हूँ, लाता हूँ। सः= वह जातवेदाः=ज्ञानयुक्त अग्नि मे= मुझे श्रद्धां च= श्रद्धा को भी और मेधां च= मेधा को भी प्रयच्छतु= प्रदान करे।

**साभार- वैदिक विनय**

### नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

मेरा यह सौभाग्य है कि आज यह अत्यन्त खूबसूरत भव्य संग्रहालय देखने को मिला। राजस्थान ही नहीं देश की बहुत ही महान् दैदीप्यमान नक्षत्र की तरह चमकने वाली हस्तियों के भव्य चित्र/प्रदर्शनी आज आपके यहाँ देखने को मिली।
महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र की प्रदर्शनी बहुत ही रोचक व मनमोहक लगी। प्राचीन ऋषियों व देशभक्तों के चरित्र को देखने का अत्यन्त सौभाग्य हमें मिला। आपको व आपकी समिति व कर्मचारियों को हमारी ओर से बहुत-बहुत साधुवाद। आपका भी नाम चमकता रहे।

- श्री महेश कुमार वैष्णव, कूड, जोधपुर, श्री सवाई सिंह, जोधपुर

मैं एक छोटी बच्ची हूँ, जो कि तीसरी कक्षा में पढ़ रही हूँ। मैंने महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम पढ़ा और कुछ सुना भी है लेकिन आज मेरी मनोकामना या मन की भावना पूर्ण हो गई। जो यहाँ के अंकल जी ने समझाया उससे आशा है दयानन्द की जीवनी मैं कभी नहीं भूलूँगी व जीवन सुधारूँगी।

- जय श्री चौधरी, ९७९९०१३७३८

आत्म निवेदन

# सुधारों का सर्वव्यापी स्वागत हो

प्रत्येक समाज के जीवन में मान्यताओं, परम्पराओं और आचरण के क्रम में समानता, नैतिकता का स्तर सदैव एकसा नहीं रहता, समय के साथ इनमे परिवर्तन होते रहते हैं। जीवन्त समाज वही होता है जो कभी न कभी ऐसी सभी मान्यताओं, प्रक्रियाओं पर जो कि समाज में असमानता, विभेद, वैषम्य की जनक होती हैं उन्हें विनष्ट कर देता है अथवा न्यून करने का प्रयत्न करता रहता है। जो समाज ऐसा करने में सफल रहता है वही गतिशील रह पाता है। समाज के नेताओं, कर्णधारों, प्रमुखों का यह कर्तव्य है कि वे इस दिशा में सचेत रह अपने कर्तव्य का पालन करें।

सदा यह देखने में आया है कि जब परम्पराएँ स्थापित हो जातीं हैं तो जन मानस उनके गुणावगुण अथवा औचित्य पर विचार किये बिना उन्हें यथावत् स्वीकार कर लेता है और यहाँ तक कि अनेक अमानवीय प्रथाएँ पवित्रता के आवरण में सुस्थिर हो जाती हैं। इतिहास गवाह है कि जब कोई महापुरुष इनका विरोध करता है तो अपने ही समाज के लोग उसकी बात पर ध्यान देना तो दूर उसका प्रबल विरोध प्रारम्भ कर देते हैं। पर बुराइयों, विपरीतताओं, वैषम्य, अन्याय, शोषण को परंपरा मानने का सतत् विरोध होता रहे तो इनका अन्त होता ही है। भारतीय संस्कृति की बात करें तो उसमें मानवता के उदात्ततम गुण समाविष्ट मिलते हैं, परन्तु अनेक कारणों से हमारे यहाँ भी सांस्कृतिक मूल्यों का पतन हुआ। समय-समय पर उच्च विचार वाले महापुरुषों ने इन रुढ़ियों, कुरीतियों को समूल नष्ट करने का प्रयास किया। इन्हें भी प्रारम्भ में विरोध का सामना करना पड़ा पर अन्ततोगत्वा समाज की पटरी सीधे मार्ग पर चलने लगी। भारत ही नहीं दुनिया के हर देश में ऐसा होता है, हुआ है और होता रहेगा।

भारत में मुस्लिम आक्रान्ताओं तथा बाद में अंग्रेजों की लम्बी गुलामी के काल में हमारा सांस्कृतिक पराभव हुआ। जिस देश में हिंसा को परम धर्म माना जाता था वहाँ धर्म के नाम पर ही हिंसा का ऐसा ताण्डव हुआ कि मानवता शर्मसार हो जाय। जिस यज्ञ को अध्वर अर्थात् हिंसा से रहित माना जाता था वहीं **'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति'** कहकर यज्ञ में बलि दी जाने लगी। कालांतर में मंदिरों में पशुबलि दी जाने लगी। क्षत्रिय वर्ग दशहरा आदि के अवसर पर भैंसों की बलि देना क्षात्रधर्म का प्रतीक मानने लगा। वेदों में जिन पशुओं के प्रति भी मित्र भाव को रखने के निर्देश दिए गए थे उन्हीं मूक निरीह प्राणियों की धर्म के नाम पर हत्या की जाने लगी।

गत शताब्दी में देखें तो आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने समग्र क्रान्ति का बिगुल बजाते हुए पशु हत्या का भी निषेध किया। धर्म के नाम पर निरीह प्राणियों की हत्या से महर्षि दयानन्द अत्यन्त व्यथित थे तभी उन्होंने उदयपुर प्रवास में अपने प्रति अतुल्य भक्तिभाव रखने वाले उदयपुर नरेश की कचहरी

में उपस्थित हो, अपने को निरीह पशुओं का वकील बताते हुए पुरजोर अपील की कि वे दशहरे पर दी जाने वाली पशुबलि-प्रथा को बंद करें। नरेश ने स्वामी जी को आश्वसन दिया कि वे जनमानस में गहराई से बैठी इस कुप्रथा को धीरे-धीरे पूर्णरूप से बंद कर देंगे। ऐसी कुप्रथाएँ लगभग सभी मतमतान्तरों में विद्यमान हैं। पर अनेक मतस्थजन सुधार-प्रक्रिया का स्वागत न कर यथास्थिति को धर्म के नाम पर बनाए रखना चाहते हैं। उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि आखिर समाज में व्याप्त कुरीतियों का अंत समाज के द्वारा किया जाता है और अगर आवश्यक हो तो इन कुरीतियों के खिलाफ कानून बनाने की समाज के अन्दर से ही माँग होनी चाहिए और सरकार के किसी भी ऐसे प्रयत्न का समर्थन होना चाहिए तभी समाज अनैतिक कुप्रथाओं के बंधन से मुक्त हो सकेगा। पशु, विशेष रूप से लाभकारी पशुओं जैसे दूध देने वाले गाय आदि पशुओं की हत्या रोकने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने हस्ताक्षर अभियान चलाया जिसका उद्देश्य महारानी विक्टोरिया को गौवंश वध के खिलाफ कानून बनाने के लिए प्रेरित करना था। आर्य समाज ने मंदिरों में धर्म के नाम पर चल रही पशुबलि प्रथा को रोकने में अथक परिश्रम तथा उद्योग किया है। सवाई माधोपुर के पास एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है 'कैला देवी'। हमें अभी भी स्मरण है, जब हम ११-१२ वर्ष के होंगे तब वहाँ के प्रसिद्ध कैला देवी मंदिर में एक विशेष मेले के अवसर पर पशु बलि दी जाती थी। उस समय आर्य समाज उन्हीं दिनों में वहाँ पशु-बलि निषेध की प्रेरणा देने हेतु कैम्प लगाता था। पूज्य पिताजी आचार्य प्रेमभिक्षु जी प्रमुखों में होते थे तथा पूरे परिवार के साथ वहाँ होते थे। मंदिर का पूरा प्रांगण रक्त से सराबोर हो अत्यन्त बीभत्स दीखता था। आर्य समाज के स्वयंसेवकों का प्रारम्भ में तीव्र विरोध होता था पर धीरे-धीरे जागृति आती गयी।

बुंखाल थैलीसण गढ़वाल के मेले में पशु बलि दी जाती रही। उत्तराखंड में होने वाला यह पशु बलि मेला प्रतिवर्ष नवंबर के अंत या दिसंबर के आरंभ में होता है। यहाँ आने वाले लोग मानते हैं कि कालिंका देवी के पास यदि भैंसा या बकरा चढ़ाने की मनौती माँगी जाए तो वह पूरी होती है और संतान प्राप्ति, बीमारी, चुनाव में जीत जैसी अनेक मनौतियाँ पूरी होती हैं। मेले के दिन पहाड़ी पर बने बुंखाल कालिंका के मंदिर में हजारों लोगों की भीड़ जुटती है और बलि दिए जाने वाले भैंसे को पहले दौड़ाया जाता है, जब वह थक जाता है, तब उसकी बलि दी जाती है। इसके बाद उसके शव को पहाड़ी से नीचे फेंक दिया जाता है। १९८० के दशक में स्वामी मनमंथन पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने इस दिशा में काम किया और चंद्रबदनी मंदिर में बलि प्रथा समाप्त हुयी। आर्य समाजी गबर सिंह राणा पिछले चार दशकों से पशु बलि समाप्त कराने के लिए जनजागरण में लगे हैं। उनका भी खूब विरोध हुआ, कई बार बलि समर्थकों ने उनका तम्बू ही उखाड़ फैंका पर वे डटे रहे, उनकी मेहनत रंग लाई और कालीमठ में बलि बंद हो गई, और इसका कई अन्य जगहों पर भी अनुसरण हुआ। आज भी यह बलि प्रथा पूर्णतः बंद नहीं हुयी है परन्तु कानून तथा जन जागृति के प्रयासों से पशु- क्रूरता समाप्त हो जायेगी ऐसी आशा है।

जो कल्याणकारी धर्म अहिंसा, सत्य, प्रेम, करुणा और दयामूलक सिद्धान्तों पर टिका है, उसके नाम पर अथवा उसकी आड़ लेकर पशुओं का वध करना धर्म के उज्ज्वल स्वरूप पर कालिख पोतने के समान ही है। ऐसा करने का अधिकार किसी को भी नहीं है।

परन्तु इस बात को हिन्दू धर्म के अनुयायियों में से अधिकांश ने स्वीकार कर इन बर्बर प्रथाओं का समर्थन करना बंद कर दिया है और इस सम्बन्ध में बने कानून, न्यायालय के आदेशों तथा समाज सुधारकों के प्रयासों का अब विरोध नगण्य जैसा है। हम सोचते हैं कि धर्म के नाम पर चल रहे इस जघन्य अपराध को बंद करने के सभी तरीकों को जब हिन्दू समाज मान चुका है और अपने को अब दूर करता जा रहा है तब अन्य मतावलम्बियों को उनके समाज में व्याप्त पशुवध को रोकने में अधर्म के दर्शन क्यों होने चाहिए और ऐसे किसी कानून जैसे 'पशु क्रूरता निवारण अधिनियम' को स्वीकार क्यों नहीं करना चाहिए। इसके लिए पहल क्यों नहीं करनी चाहिए।

यह बात नहीं है कि हिन्दू समाज में कुरीतियाँ व्याप्त नहीं हैं। नारी के समाज में स्थान निर्धारण को लेकर तथा जन्म के आधार पर एक बड़े वर्ग के आत्मसम्मान को लेकर अमानवीय व्यवहार हमारे यहाँ प्रचलित रहा और बाबजूद सामजिक जागृति तथा कानूनों के आज भी न्यून मात्रा में ही सही मौजूद है पर यह है कि इस सम्बन्ध में कार्यशील महापुरुषों का विरोध तो प्रबल हुआ पर उनके कार्य को कुफ्र मान सार्वजनिक फतवे जारी नहीं किये गए। इतना भी समाज सुधार के लिए पर्याप्त था। सती प्रथा ने

धर्म का रूप ले लिया था। राजा राम मोहन राय ने इसका प्रबल विरोध किया। अभी भी रूपकंवर के मामले में इस बर्बर प्रथा ने पुनः सर उठाया तो आर्य समाज ने सती प्रथा के विरोध में प्रबल आन्दोलन चलाया। आम हिन्दू इसकी अमानवीयता को हृदय से स्वीकार करते थे अतः सती प्रथा व इसके महिमामंडन को रोकने के लिए बनाए गए कानून को स्वीकार कर लिया गया, इसे हिन्दुओं द्वारा अपने धर्म के ऊपर आक्रमण के रूप में नहीं देखा गया। एक सच्चे नागरिक की यही मानसिकता होनी चाहिए कि समाज में जो भी अभद्र है, अकल्याणकारी है, वैषम्य का सृजन करने वाला है उसको समाप्त करने हेतु यदि कोई प्रयास होता है चाहे वह कानून के रूप में हो उसे समर्थन दे। उसे अपने समुदाय के लिए खतरा नहीं बल्कि श्रेयस्कर समझे। आज अल्पसंख्यक कहे जाने वाले वर्गों को स्वकल्याण के लिए यह समझना होगा कि नारियों की स्थिति को बराबरी देने के लिए, उनकी बेहतरी के लिए पर्सनल कानूनों में अगर सुधार प्रस्तावित है तो उसका स्वागत करना चाहिए न कि विरोध।

सभी जानते हैं कि बाल विवाह नारी जाति के लिए अभिशाप है। इसे हिन्दू धर्म में एक प्रकार से धर्म का रूप दे दिया गया था। परन्तु जैसा हमने लिखा बुराइयों पर प्रहार भी समुदाय के भीतर से होना चाहिए, महर्षि दयानन्द ने इसका प्रबल विरोध किया। आप उनके द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ देखें- वे बालविवाह को देश में बिगाड़ का मूल मानते हैं। पूर्ण युवावस्था प्राप्त होने पर गुण कर्म स्वभाव के मेल के आधार पर स्वयंवर विवाह को वे देश में सब सुधारों की नींव मानते हैं। उनके पश्चात् आर्यसमाज ने बालविवाह रोकने के लिए जन जागृति के अभियान तो छेड़े ही साथ में कानून निर्माण की माँग की। यद्यपि हिन्दू विवाह अधिनियम एक पर्सनल लॉ है परन्तु सुधार की भावना से स्वयं समुदाय द्वारा कानून बनाकर बाल-विवाह को प्रतिबंधित कराने का प्रयास किया गया। आर्य समाज के नेता दीवान हरविलास शारदा ने यह बिल रखा जिसे १९२९ में कानून बनाया गया। यह भी हिन्दुओं का पर्सनल लॉ था जिसमें स्वयं समाज के प्रबुद्धों द्वारा सुधार करवाया गया, यद्यपि उस समय इसका विरोध भी हुआ परन्तु बहुसंख्य समाज ने इसकी कल्याणकारी प्रवृत्ति को देखते हुए इसे स्वीकार किया। आज हिन्दू नारी को स्वामी दयानन्द और उनके शिष्य शारदा जी का कृतज्ञ होना चाहिए।

एक समय था जब हिन्दू विवाह अधिनियम में अंतर्जातीय तथा अंतर्धार्मिक विवाह स्वीकार्य नहीं थे। आर्य समाज ने इस को समाप्त करने हेतु प्रबल प्रयास किये। मध्यावधि में 'आर्यन स्पेशल मेरिज एक्ट' बना जिसमें आर्यों के मध्य होने वाले विवाहों में अंतर्जातीय तथा अंतर्धार्मिक विवाह स्वीकार्य किये गए। आज तो हिन्दू विवाह अधिनियम के अंतर्गत भी ये स्वीकृत हैं।

अस्पृश्यता हिन्दू समाज पर एक कलंक के रूप जाना जाता है। किसी के जन्म के आधार पर किसी को तिरस्कृत करना, उसका अपमान करना, हेय समझना अमानवीय है इसमें कोई संदेह नहीं। आर्यों के इतिहास में कभी भी ऐसी व्यवस्था को समर्थन नहीं दिया गया, परन्तु बीच के कालखण्ड में यह अभिशप्त परंपरा स्थापित हो गयी जिसने सारे सामजिक ढाँचे व आपसी समरसता को हिला कर रख दिया। स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में इसका प्रबल विरोध किया और जिन लोगों ने जन्माधारित जाति व्यवस्था को वेद प्रणीत बताया उन्हें स्वामी जी ने चैलेंज दिया। वे लोग कभी भी वेद में इसका समर्थन नहीं दिखा सके। अतः ऋषि दयानन्द ने घोषणा की कि जन्माधारित जाति व्यवस्था न वेद समर्थित है, न इतिहास समर्थित और न ही प्राकृतिक न्याय की कसौटी पर खरी उतरती है और न ही कल्याणकारी है अतः इसका अंत होना चाहिए। आर्य समाज ने दलित वर्ग को नाम देने के साथ ही उनकी सामाजिक मान्यता व अन्य वर्ग के साथ बराबरी को मान्यता देने के लिए इनके लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए। गुरुकुलों में उनको हर प्रकार से बराबरी का दर्जा मिला सबसे बड़ी बात कि उनके उपनाम के रूप में जातिसूचक शब्द लगाने की परंपरा को समाप्त कर उनके नाम के आगे शास्त्री, विद्यालंकार, वेदालंकार जैसे उपाधिसूचक उपनाम जोड़ने की परंपरा डाल दी। अब समाज में वे केवल विद्वान् पंडित हैं, दलित नहीं जो कि स्वाभाविक है, कल्याणकारी है। काश भारत में इस सिस्टम को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया जाता तो दलित समस्या जैसी कोई समस्या ही नहीं होती। राजनेताओं ने तो जो कुछ किया उससे तो दलित दलित ही रह गया। उसे सदैव दलित बनाकर रखने में ही राज नेताओं का भला है। आज उसकी सम्पदा का वर्द्धन भले ही हो गया हो पर वह मुख्यधारा में नही रह सका। आर्यसमाज ने सामाजिक स्तर प्रदान करने के लिए यही प्रयोग नारी जाति के साथ किया। जिस नारी को वेदमंत्र सुनाने

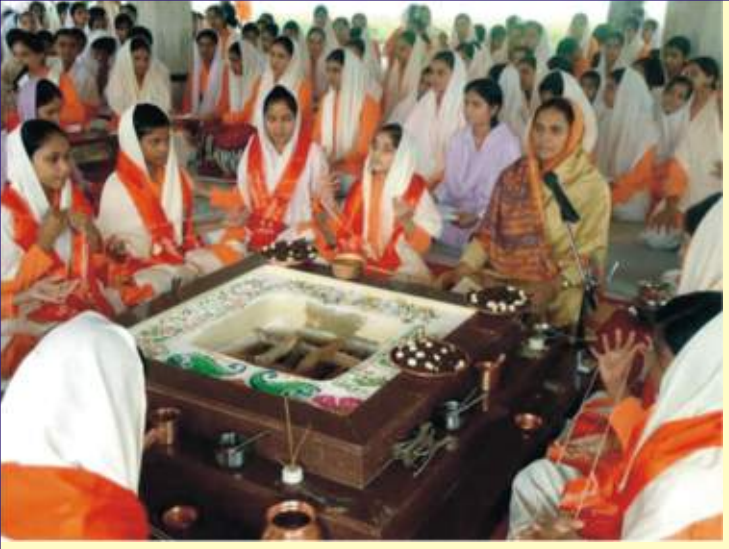

पर सजा का प्रावधान था आर्य समाज ने उन्हें ही यज्ञ की ब्रह्मा बना दिया। कन्या गुरुकुलों से अब दलित नहीं विदुषी आचार्यायें निकलती हैं। इस पर भी जब अस्पृश्यता को दंडनीय अपराध बनाने हेतु जब अस्पृश्यता निवारण अधिनियम बनाया गया तो हिन्दुओं द्वारा इसका विरोध नहीं किया गया।

प्रश्न यह है कि जब समाज के लिए कल्याणकारी प्रावधानों को लागू करने के लिए कानून बानाया जाता है तो हिन्दू समाज में समुदाय के कल्याण की भावना से इसका विरोध या तो नहीं होता अथवा अत्यन्त नगण्य होता है, परन्तु अल्पसंख्यक समाज के समक्ष जब भी ऐसा मुद्दा आता है तो उनके धर्मगुरु इतना बबाल मचाते है कि उस पर विचार तक होने की स्थिति नहीं आती। यही बात देश में एक 'सामान आचार संहिता' की जब भी बात की जाती है, उत्पन्न हो जाती है। जब देश एक है, संविधान एक है, हम सब बराबरी भाईचारे, अभेद के लिए कटिबद्ध हैं, सबको सामान स्थान, अधिकार मिले इस को लेकर सहमत हैं तो फिर चिंता किस बात की है? समान आचार संहिता देश के प्रत्येक नागरिक की, बिना जाति, मजहब, कुल, लिंग को ध्यान में रखे, उन्नति हेतु प्रावधान करने का प्रयास है तो इसमे असह्य क्या है। राष्ट्र हित के प्रावधान सभी मजहब वालों के लिए स्तुत्य होने चाहिए। समान आचार संहिता से जब हिन्दू धर्म को कोई खतरा नहीं है तो अल्पसंख्यकों के धर्म को खतरा क्योंकर हो सकता है? किसी मजहब में ईश्वर के मान्य स्वरूप, उसकी उपासना पद्धति में समान अचार संहिता कोई दखलंदाजी नहीं कर रही। आप कम से कम विचार तो कीजिए।

जब आप एक दंड संहिता पर सहमत हैं, अपने मजहब की दंड संहिता लागू करना नहीं चाहते तो फिर एक आचार संहिता पर सहमत क्यों नहीं? यह दोहरे मानदंड क्यों? इसलिए हिन्दुओं की भाँति स्वकल्याण के लिए अल्पसंख्यकों को भी समान आचार संहिता पर विचार अवश्य करना चाहिए।

## ₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १६ पर देखें।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

**२७ मार्च**

कर्मयोगी, मामाशाह महाशय धर्मपाल जी के ९४वे वें जन्मदिवस के अवसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। महाशय जी के निरामय दीर्घायुष्य हेतु हम सभी प्रभु चरणों में नत् हैं।

## सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

# निष्कलंक दयानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन में उन पर उनके विरोधियों ने कितने ही कलंक लगाने की कोशिश की। परन्तु महर्षि जी पूर्ण ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी और ईश्वर के परम भक्त होने के कारण विरोधियों के भरपूर यत्न करने पर भी निष्कलंक जीवन ही बिता गये। जिस समय महर्षि जी ने

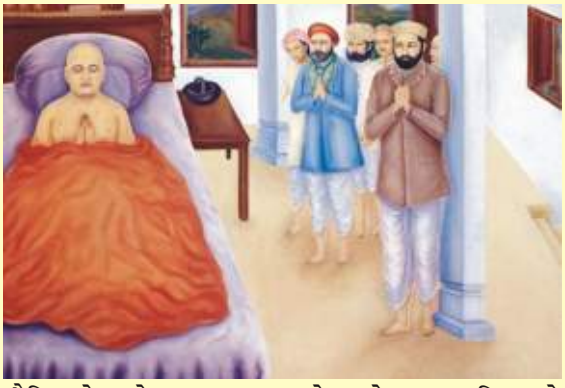

भौतिक देह को त्याग कर ब्रह्मलोक को प्रस्थान किया तो रावलपिण्डी का एक ब्राह्मण यह समाचार सुनकर जार-जार रोने लग गया, लोगों ने पूछा कि जब महर्षि यहाँ आए थे तो आप उनका सब से अधिक विरोध करते थे और उनको अपना सब से बड़ा दुश्मन समझते थे, परन्तु अब जब कि वे इस संसार से चले गये तो आप जार-जार रो रहे हैं।

अतः आप को तो प्रसन्न होना चाहिये था कि आप का शत्रु चला गया। इस पर वह ब्राह्मण कहने लगा, मैं इसलिए नहीं रोता कि दयानन्द मर गया है बल्कि मैं तो इसलिए रोता हूँ कि वह निष्कलंक मर गया है और अब उसके बाद उसका लगाया हुआ पौधा आर्यसमाज और उसके ग्रन्थ जब तक सूरज चाँद हैं पाखण्ड का खण्डन करते रहेंगे। और हम कोई जवाब न दे सकेंगे।

'परन्तु दुश्मन बात करे अनहोनी', की लोकोक्ति के अनुसार महर्षि के जीवन पर घृणित कलंक लगाने की चेष्टा उनके शत्रु करते रहे, परन्तु भगवान् अपने भक्त की हर समय रक्षा करते रहे। किसी कवि ने ठीक कहा है-

**जाको राखे साईयां मार सके न कोय।**
**बाल न बांका कर सके जो सब जग वैरी होय।।**

१. जब-जब उनके विरोधी उनकी युक्तियों का कोई उत्तर न दे सकते थे, और उनके सामने अपने आप को हर तरह असमर्थ पाते थे, यह मशहूर करते थे कि यह तो अंग्रेजों ने हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिए एजेण्ट रखा हुआ है। परन्तु महर्षि इंजील का पुरजोर खण्डन करते तो विरोधियों का यह हथियार बिल्कुल निकम्मा हो कर रह जाता था।

२. काशी के पण्डितों ने एक दुष्टा स्त्री को महर्षि के पास भेज कर कलंक लगाना चाहा परन्तु महर्षि उनकी चाल को भाँप गये। और पण्डित लोग इस बार भी महर्षि को कलंक लगाने में असफल रहे।

३. मथुरा के पण्डों ने तो महर्षि को बदनाम करने के लिए सब हथियार वर्ते। पहले एक वैश्या को लालच देकर भेजा, परन्तु उसका उद्देश्य पूर्ण न हो सका।

४. जब मथुरा के पण्डों का वैश्या भेजकर महर्षि को कलंकित करने का प्रयत्न असफल रहा, तब उन्होंने एक कसाई और एक शराब बेचने वाले को तैयार किया कि वे स्वामी जी के व्याख्यान-स्थल पर जाकर उनको बदनाम करें जिसका वर्णन निम्नलिखित है- 'अतः ये दोनों दुष्ट आत्मा वहाँ पहुँचे जहाँ महर्षि व्याख्यान दे रहे थे। और ऊँची आवाज में शोर गुल करके कहने लगे बाबा हमारे शराब मांस के दाम तो दीजिए। स्वामी जी ने हंस कर कहा- बहुत अच्छा, व्याख्यान के बाद तुम्हारा हिसाब भी चुका दूँगा। व्याख्यान के बाद स्वामी जी ने दोनों को अपने पास स्टेज पर बुलाया कि आओ! आपका हिसाब करके आपको दाम देवें। जब वे दोनों स्टेज पर पहुँचे तो महर्षि एक हाथ से एक का और दूसरे हाथ से दूसरे का सिर पकड़ कर एक दूसरे के साथ टकराने लगे, और कहा कि बतलाओ तुम्हारे कितने कितने दाम हैं। जब एक दो टक्कर दोनों के सिरों में महर्षि ने लगाई तब उनके होश ठिकाने हुए और हाथ जोड़कर क्षमा माँगी, और कहा कि हम को अमुक पुरुषों ने सिखला पढ़ाकर आपको कलंक लगाने को भेजा था। दयालु दयानन्द ने उनको छोड़ दिया और क्षमा प्रदान कर दी।

साभार- पूर्ण पुरुष का विचित्र जीवन चरित्र

# यजुर्वेद में पशु पालन

मानव जीवन को विकास के मार्ग पर चलने पर सबसे अधिक सहायता पशुओं से ही प्राप्त होती रही है। गाय, भैंस, भेड़, बकरी तथा ऊँटनी से उसे दूध प्राप्त होता है जिसे आदर्श भोजन ही नही वरन् पूर्ण भोजन माना जाता है। राह में चलते समय पैरों को काँटो एवं धूप से बचाने के लिए जिन जूतों का वह उपयोग करता है वे भी मृत पशुओं की खाल से ही निर्मित होते हैं। घोड़ा, ऊँट, गदहा, बैल और हाथी सवारी तथा माल ढोने के कार्य में उपयोगी होते हैं। बैल, भैंसा और ऊँट कृषि कार्य में सहायक होते हैं। कुत्ते घर की रक्षा करने में सहायक होते हैं। इसलिए मानव जाति अपने उद्भव के काल से ही पशुपालन को महत्व देती रही है। मानव जाति की प्रथम साहित्यिक रचना वेद में भी इसलिए पालतू पशुओं के विषय में बताया गया है। वैदिक ऋषियों ने इन पशुओं के गुण दोषों का वर्णन करते हुए उनके स्वभाव का भी वर्णन किया है। यजुर्वेद में इस विषय में बहुत विस्तार के साथ चर्चा हुई है, हम पाठकों के लिए यजुर्वेद से ही इस विषय में संक्षेप में कुछ बताना पसन्द करेंगे।

**घृतेनाक्तौ पशूँस्त्रायेथाꣳ रेवति यजमाने प्रियं धाऽआविशl**
**उरोरन्तरिक्षात्सजूर्देवेन वातेनास्य हविषस्त्मना यज समस्य तन्वा भवl वर्षो वर्षीययसी यज्ञे यज्ञपतिं धाः स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहाl**

- यजुर्वेद ६/११

भावार्थ- यज्ञ के लिए घृत आदि पदार्थ चाहने वाले मनुष्यों को गाय आदि पशु पालने चाहिए। घृतादि अच्छे-अच्छे पदार्थों से अग्निहोत्र से लेकर उत्तम यज्ञों से जल और पवन की शुद्धि कर सब प्राणियों को सुख देना चाहिए।

**वि मुच्यध्वमघ्न्या देवयानाऽअगन्म तमसस्पारमस्यl**
**ज्योतिरापामl**

- यजुर्वेद १२/७३

भावार्थ- इस मंत्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। मनुष्यों को चाहिए कि गौ आदि पशुओं को कभी न मारे न मरवाये तथा न किसी को मारने दे। जैसे सूर्य के उदय से रात्रि निवृत्त होती है वैसे वैद्यक शास्त्र की रीति से पथ्य अन्नादि पदार्थों का सेवन कर रोगों से बचो।

फिर त्रयोदश अध्याय मंत्र ४७ में कहा गया है कि कोई भी मनुष्य सबके उपकार करने वाले पशुओं को कभी न मारे किन्तु इनकी अच्छी प्रकार रक्षा कर और इनसे उपकार लेकर सब मनुष्यों को आनन्दित करे।

अगले मंत्र में इसी मन्तव्य पर बल देते हुए पुनः कहा गया है- मनुष्यों को उचित है कि एक खुर वाले घोड़े आदि पशुओं और उपकारक वन के पशुओं को भी कभी न मारे जिनके मारने से जगत् की हानि और न मारने से सबका उपकार होता है उनका सदैव पालन पोषण करे और जो हानि कारक पशु हों उनको मारे।

जिन पशुओं का उपयोग कृषि कार्यों में होता है उनके विषय में यजुर्वेद अध्याय १३ मंत्र ४६ में कहा गया है-

हे राजपुरुषो! तुम लोगों को चाहिए के जिन बैल आदि पशुओं के प्रभाव से खेती आदि काम, जिन गौ आदि से दूध, घी आदि उत्तम पदार्थ प्राप्त होते हैं, जिनके दूध आदि से प्रजा की रक्षा होती है उनको कभी मत मारो और जो जन इन उपकारक पशुओं को मारे उनको राजादि न्यायाधीश कठोर दण्ड देवें। जो जंगल में रहने वाले नील गाय आदि प्रजा की हानि करें वे मारने योग्य हैं। अगले मंत्र में कहा गया है-

जिन भेड़ आदि के रोम और त्वचा मनुष्यों को सुख देते हैं उनको जो दुष्टजन मारना चाहे उनको संसार में दुःखदायी समझो और उनको अच्छी प्रकार दण्ड दो। अगले मंत्र में बकरे और मोर को मारने से रोका गया है।

**त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि शृणुधी गिरःl**
**रक्षा तोकमुत त्मनाl**

- यजुर्वेद १३/५२

पदार्थ- हे (पविष्ठ) अत्यन्त युवा। (त्वम्) तू रक्षा किये हुए इन पशुओं से (दाशुषः) सुख दाता (नृत्) धर्म रक्षक मनुष्यों की (पाहि) रक्षा कर। इन (गिरः) सत्य वाणियों की (शृणुधी) सुन और (त्मना) अपने आत्मा से मनुष्य (उत्) और पशुओं के (लोकम्) बच्चों की (रक्ष) रक्षा कर।

भावार्थ- जो मनुष्य मनुष्यादि प्राणियों के रक्षक पशुओं को बढ़ाते हैं और कृपामय उपदेशों को सुनते-सुनाते हैं वे अन्त

में सुख को प्राप्त होते हैं।

पशु पालन से अपनी व दूसरों की भी पालना होती है।

यजुर्वेद अध्याय २० मंत्र ८१ का भावार्थ है- गाय, घोड़ा, हाथी आदि पालना किये पशुओं से अपनी और दूसरे, मनुष्यों की पालना करनी चाहिए।

यजुर्वेद अध्याय २९ मंत्र १६ में घोड़े के पैरों में लोहे की नाल तथा लगाम लगाने का वर्णन हुआ है।

यजुर्वेद अध्याय २१ मंत्र संख्या ४६ में घोड़े को प्रशिक्षित करने को तथा मंत्र संख्या ४४ में हाथी, घोड़ा, बैल आदि को अच्छी शिक्षा देने को कहा गया है।

चौवीसवाँ अध्याय तो नाना प्रकार के पशु-पक्षियों के वर्णन से ही भरा हुआ है। इसमें पशु-पक्षियों के स्वभाव का गहन अध्ययन कर उसी प्रकार के स्वभाव वाले देवताओं के साथ उन्हें रखा गया है।

**उक्ताः सञ्चराऽएताः शुनासीरीयां श्वेता वायव्याः श्वेताः सौर्याः।**

- यजुर्वेद २४/१९

भावार्थ- जो जिस पशु का देवता कहा गया है उससे उस पशु का गुण ग्रहण करना चाहिए। जैसे चन्द्रमा के समान जो पशु है उनका वर्णन यजु. २४/३२ में हुआ है। इनमें कुलुंग नामक पशु, बनेला बकरा, न्योला, कुक्कर मृग सामान्य सियार, गोरा हरिण आदि सम्मिलित हैं। यजुर्वेद अध्याय २४

मन्त्र २९ में प्रजापति के गुण वाले पशुओं में हाथी का नाम आया है। इसी प्रकार मंत्र ३१ में छोटे घोड़े और विशेष सिंह को प्रजापति का पशु माना गया है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने यजुर्वेद के भाष्य में यजु. २९/५८ के भावार्थ में लिखा है कि हे मनुष्यो! तुम लोगों को चाहिए कि जिस देवता वाले जो-जो पशु विख्यात् हैं वे उन उन गुणों वाले उपदेश किये हैं ऐसा जानो। पशुओं की देख भाल ठीक हो। यजुर्वेद अध्याय २५ मंत्र में ३२ में कहा गया है-

**यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति।**
**यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु॥**

भावार्थ- मनुष्यों को ऐसी घुड़साल में घोड़े बाँधने चाहिए जहाँ इनका रुधिर आदि मांछि आदि न पीवें। जैसे यज्ञ करने वाले के हाथ में लिपटे हुए हवि को धोने आदि से छुड़ाते हैं वैसे ही घोड़े आदि पशुओं के शरीर में लिपटी धूलि आदि को नित्य छुड़ावें।

यजुर्वेद अध्याय २५ मंत्र ४१ का भावार्थ है- हे मनुष्यो। जैसे घोड़े को सिखाने वाला चतुर जन चौंतीस चित्र विचित्र गतियों से घोड़े को प्रशिक्षित करता है वैसे ही और पशुओं की रक्षा कर उनकी उन्नति करनी चाहिए।

शिवनारायण उपाध्याय
दादाबाड़ी कोटा ( राज. )

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
**सत्यार्थप्रकाश**
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

**फार्म.IV**

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
२. प्रकाशन की नियत अवधिः- मासिक
३. मुद्रक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
४. प्रकाशक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
५. सम्पादक का नामः- अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः- भारतीय
पताः- नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः- ०७.०३.२०१७
प्रकाशक के हस्ताक्षर

# महिला अधिकार

महिला अधिकारों पर चर्चा कोई नयी नहीं है, बल्कि यह बार-बार और लगातार होने वाली चर्चाओं में शामिल है। प्रश्न उठता ही है कि आखिर इतने आन्दोलनों और बदलाव की सुगबुगाहट के बावजूद महिलाओं की हालत में अपेक्षित सुधार क्यों नहीं आ सका है, विशेषकर सामाजिक सम्बन्धों से जुड़े मामलों को लेकर। इन मामलों की स्थिति किस हद तक खराब है, इसे हाल ही में सामने आयी घटनाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। बालिका वधू नामक मशहूर टीवी सीरियल में काम करने वाली प्रत्यूषा बनर्जी की आत्महत्या ने इस मामले में हो रही बहस पर सवाल उठा दिया कि क्या आधुनिक दिखना, आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना भर ही महिला सशक्तिकरण मान लिया जाना चाहिए? इन मामलों में हो रही

जाँच की कई परतें अभी सामने आएँगी, किन्तु शुरूआती जानकारी के अनुसार इस लड़की का इसके बायफ्रेंड द्वारा बेजा इस्तेमाल किया गया, जबकि एक अन्य लड़की ने प्रत्यूषा को प्रताड़ित करने में अपना भरपूर योगदान दिया। सवाल उठता ही है कि आखिर एक महिला ही क्यों इस तरह के हालात का शिकार हो जाती है?

इसी तरह का एक और केस जिया खान की आत्महत्या से जुड़ा सामने आया था। गौरतलब है कि यह वह लडकियाँ अथवा महिलाएँ हैं, जो आधुनिक, पढ़ी-लिखी और आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत मजबूत हैं। आखिर कुछ तो है, जहाँ हम चूके जा रहे हैं और असल सशक्तिकरण की व महिला अधिकारों की गहन समझ विकसित नहीं कर पा रहे हैं। न केवल बॉलीवुड जैसे स्थानों पर, बल्कि समाज का नेतृत्व करने वालों के यहाँ भी घरेलू हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। बहुजन समाज पार्टी के सांसद नरेंद्र कश्यप की बहू हिमांशी कश्यप की घर के बाथरूम में सिर में गोली लगने पर संदिग्ध हालत में मौत हो जाने से लोग सन्न हैं। इस मामले में हिमांशी के चाचा ने छह लोगों के खिलाफ दहेज हत्या और प्रताड़ना का मामला दर्ज करवाया, जिसमें से कई लोग

गिरफ्तार भी हुए हैं। गौरतलब है कि हिमांशी के पिता हीरालाल कश्यप बसपा के पूर्व मंत्री रहे हैं, जिनका आरोप है कि शादी के बाद से ही हिमांशी को दहेज के लिए उत्पीड़ित किया जाता था और कई बार नौबत तो मारपीट तक भी पहुँच जाती थी।

आश्चर्य यह है कि दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गयी और जो लोग संसद भवन में बैठकर लोगों के हितार्थ कानून का निर्माण करते हैं, उनके यहाँ ही दहेज प्रताड़ना अगर हो रही है तो यह शर्मनाक घटना तो है ही, उससे भी बढ़कर महिला अधिकारों पर बड़ा प्रश्नचिह्न भी लगाती है।

इन मामलों को देखने पर तीन-चार बातें बड़ी स्पष्ट रूप में सामने आती हैं कि महिला उत्पीड़न के कई मामलों में जाने अनजाने खुद कई महिलाएँ भी शामिल रहती हैं। खासकर घरेलू हिंसा जैसे मामलों में तो यह तथ्य कई बार अपने आक्रामक रूप में सामने आता है तो कार्पोरेट या बॉलीवुड जैसी जगहों पर महिलाएँ साजिशन शिकार करती भी हैं और होती भी हैं। इन्हीं मामलों पर महिला अधिकारों की बड़ी पैरोकार इंदिरा नूई की कुछ बातें अवश्य गौर करने वाली हैं, जो हर स्तर पर महिलाओं की गैर-बराबरी का मुद्दा तो उठाती ही हैं, साथ ही साथ महिलाओं के रवैये पर भी सवाल उठाती हैं, जिसमें बदलाव लाया जाना समय की जायज माँग बन चुकी है। पेप्सीको की मुख्य कार्यकारी अधिकारी और भारतवंशी इंदिरा नूई को 'स्वीटी' या 'हनी' बुलाया जाना

पसंद नहीं है, लिहाजा नूई इस बात की पुरजोर वकालत करती हैं कि कार्यक्षेत्र और समाज में महिलाएँ बराबरी का दर्जा पाने की हकदार हैं। हालाँकि, स्वीटी या हनी जैसे शब्द आम प्रचलन में हैं और यह केवल महिलाओं के लिए ही प्रयोग में नहीं आते, बल्कि लडकियाँ भी अपने बायफ्रेंड को 'बाबू' 'बेबी' जैसे शब्दों से बुलाती ही हैं, किन्तु इंदिरा जी का बयान इस मायने में जरूर सटीक है कि महिलाओं को सिर्फ 'शोपीस' ही नहीं समझना चाहिए। उनका कहना है कि एक व्यक्ति के तौर पर महिलाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। नूई की इस माँग से भला किसे ऐतराज हो सकता है, किन्तु यह माँग कोई आज की तो है नहीं और यही कई लोगों के लिए चिंतन-मनन की बात भी है।

'न्यूयार्क टाइम्स' के सहयोग से आयोजित 'वुमेन इन द वर्ल्ड' शिखर सम्मेलन में पत्रकारों और लेखकों की मौजूदगी में नूई ने साफ कहा कि, 'हमें अभी भी बराबरी का दर्जा मिलना बाकी है।' जाहिर तौर पर अगर इंदिरा नूई जैसी शख्सियत औरतों की गैर-बराबरी का मुद्दा उठाती हैं तो जरूर इसमें उनका दर्द भी छुपा हुआ है। यह और कुछ न होकर औरतों को एक खिलौना या 'भोग्या' के रूप में देखे जाने से सम्बंधित भी हो सकता है, हनी, स्वीटी, बेब जैसे संबोधनों से स्वाभिमान को ठेस भी पहुँचाया जाता है, तो महिलाओं के साथ सामान्य लोगों के तौर पर बर्ताव न करने से भी सम्बंधित हो सकता है।

इस सम्मेलन में और भी कई महत्वपूर्ण मुद्दे उठे, जिसमें समान वेतन की माँग को लेकर 'लड़कों की जमात' में शामिल होने के लिए कई सालों से हो रही महिलाओं की माँग भी शामिल हुई। इस सम्बन्ध में इंदिरा नूई ने कहा कि महिलाओं ने अपनी डिग्री, स्कूलों में अच्छे ग्रेड से कार्यक्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है, जिसके कारण पुरुष समकक्षों ने हमें 'गंभीरता' से लिया है, किन्तु इस सफर में अभी लम्बा रास्ता तय करना बाकी है। इसके लिए महिलाओं को वेतन में बराबरी की जरूरत है, जिसके लिए महिलाएँ अब तक लड़ाई लड़ रही हैं। एक और जो सबसे महत्वपूर्ण बात नूई ने कही, वह महिला अधिकारों से जुड़ी बेहद सटीक बात है। नूई ने खेद जताते हुए कहा कि कार्यक्षेत्र में महिलाएँ अन्य महिलाओं की मदद नहीं करतीं, जो कि उन्हें अधिक से अधिक करना चाहिए। इसके लिए उन्होंने महिलाओं से आपसी सहयोग को और मजबूत करने को कहा। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि महिलाएँ अक्सर दूसरी महिलाओं से मिली जानकारियों और अनुभवों को सकारात्मक रूप से नहीं लेतीं। लेकिन यही प्रतिक्रिया पुरुषों से मिलने पर लोग उसे स्वीकार करने से नहीं हिचकते। स्पष्ट है अगर प्रोफेशनल रूप से बिजनेस के शीर्ष पर पहुँची एक महिला ऐसे सार्वजनिक बयान देती है तो इसे उसका व्यापक अनुभव ही माना जाना चाहिए। वैसे भी महिलाओं की आपसी और गैर-जरूरी जलन को कई जगहों पर पुरुष न केवल महसूस कर लेते हैं, बल्कि उसका इस्तेमाल करने में भी संकोच नहीं करते हैं। जाहिर है इस स्थिति से बचने के लिए तो महिलाओं को ही आगे आना होगा और अगर वास्तव में महिला सशक्तिकरण को मजबूत रूप में सामने लाना है तो यह काम महिलाओं को ही एकजुट होकर करना होगा। इस तरह के प्रयास समाज के कई क्षेत्रों से हो भी रहे हैं, किन्तु वह प्रतिरोध की तुलना में अपेक्षाकृत कमजोर ही हैं।

मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रहे 'भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन' के तहत मुस्लिम महिलाओं ने कई मूलभूत अधिकारों के लिए अपनी आवाज बुलंद करनी शुरू की है, किन्तु उनकी संख्या जहाँ करोड़ों में होनी चाहिए, वहीं वह १ लाख भी नहीं है। अगर हमें समाज की बेड़ियों को तोड़ना है और खुद के लिए एक नयी राह बनानी है, खुद को कमजोर नहीं पड़ने देना है, खुद को आत्महत्या की राह पर नहीं धकेलना है तो इसके लिए 'संगठन' के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं! भारतीय

संविधान के रचयिता डॉ. बी.आर.अंबेडकर ने भी तो समाज के दलित बंधुओं को 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो' का ही मन्त्र दिया था, जिसने समाज में काफी हद तक परिवर्तन भी किया है। अब क्या डॉ. अंबेडकर का यही मन्त्र देश की समस्त महिलाओं को नहीं अपनाना चाहिए? सोचिये, समझिए और जुट जाइये असल बदलाव लाने में, क्योंकि जब तक पूरे समाज में बदलाव नहीं आएगा तब तक व्यक्तिगत स्वतंत्रता या आर्थिक उन्नति से कुछ खास नहीं बदल पाएगा। यह पूरा समाज आपस में गुंथा हुआ है और बदलाव भी समाज की परिधि में ही होगा, बस डॉ. अंबेडकर का शिक्षा, संगठन और संघर्ष का मन्त्र देश की महिलाएँ अब आत्मसात कर लें!

– मिथिलेश कुमार सिंह, नई दिल्ली

# होली आनन्द और उल्लास का महोत्सव

## -:होली के उत्सव में धार्मिक व वैज्ञानिक पुट भी:-

भारत भूमि विश्व में अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। परमपिता परमात्मा ने भारत माँ का विशेष शृंगार कर विविध गुणों से परिपूर्ण किया है। कहीं आकाश छूते पहाड़ तो कहीं मैदान, रेगिस्तान, बर्फ, कल-कल करती नदियाँ। इसी के अनुसार यहाँ की सुरम्य जलवायु झूले की तरह आनन्द प्रदान करती है। इसी कारण से भारत को प्रकृति का पलना कहा गया है। पलना झूलती भारत माता षट् ऋतुओं का आनन्द अपनी गोद में बसी प्रजा को देती रहती है। ये षट् (छः) ऋतुएँ शिशिर, बसन्त, गीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त हैं। इन ऋतुओं में श्रेष्ठ ऋतु बसन्त को मानते हुए ऋतुराज की उपाधि से अलंकृत कर इसके गुणधर्म की व्याख्या करने प्रकृति के सुकुमार कवि अपनी लेखनी को धन्य करते रहे हैं। बसन्त ऋतु में फागुन (फाल्गुन) मास का आना। बसन्त ऋतु अपने प्रभाव से, अपनी यौवनता की मन मोहनी सुरम्य छटा से धरती का आकर्षक शृंगार कर हरी-पीली चुनर ओढा वातावरण अति मोहक बना देता है। ऐसे में भारत माँ के बेटे अन्नदाता (किसान) अपनी लहलहाती फसलों को देख

प्रसन्न हो झूम उठते हैं। कलम के पुजारी बसन्त ऋतु में ही विद्या-संगीत की देवी सरस्वती की पूजा पीला परिधान धारण कर करते हैं। ऐसे में विक्रम संवत् की अगुवाई, नवसंत्सर का श्रीगणेश-विदाई में गुम्फित फागुन मास की पूर्णिमा को होलिका दहन के साथ ही धरती पुत्रों के जीवन में बदलाव प्रारम्भ हो जाता है। होलिका दहन के साथ ठण्ड (शीत) की समाप्ति के साथ भारत माँ की सन्तानें गरम जल से स्नान को त्यागकर ठण्डे जल से स्नान करना प्रारम्भ कर देते हैं। यहाँ बसन्त की यौवनता का प्रभाव पशुओं की टोली पर भी अपना प्रभाव छोड़ता है। पशु टोली नवीन रोमावली (केश परिवर्तन) के नवाकर्षक परिधान धारण कर नवीन चेतना के साथ जीवन जीते दृष्टिगोचर होते हैं। पक्षी भी अपने पुराने पंखों को झाड़कर नवीन पोषक सा धारण कर आकाश में कलरव करते हुए बसन्ती वातावरण को गुंजित कर हर्षता दर्शाते हैं। तितलियाँ, भँवरे भी अपनी वाणी में नवस्वर संगीत का आनन्द बरसाते फूलों कलियों का पान कर युगल

दिलो में मादकता भरते नजर आते हैं। कोयल भी अपनी मादकता भरी कर्णप्रिय बोली से फागुन को मतवाला बना देती है। मयूर, तीतर, केका आदि पक्षी बसन्त की सेना समूह का परिचय देते हुए फागुन में पकती फसलें विजय का सन्देश देने के साथ कृषक को प्रसन्ता से भर देते हैं। कई रंगीन सपनों के साथ शस्य श्यामला धरती में रबी फसलों की बहार का परिचय महा होली पर्व कराता आ रहा है।

फसलों के आगमन पर कृषक जगत् त्योहार के रूप में मनाते आ रहे हैं। यही भारत की एक संस्कृति रही है कि फसल आगमन पर ऋतु अनुकूल पर्व उत्सवों का आयोजन होता है। हम से ही प्रेरित हो जापान-जर्मन, रूस जैसे प्रगतिशील राष्ट्रों में पर्व मनाने का रिवाज चला और आज भी सहभोज गायन वाद्यादि के साथ मनाते हैं।

गर्व है कि भारत उत्सवों-पर्वों का देश है। यहाँ सात बार-आठ त्योहार नित होते रहते हैं। यहाँ के पर्व केवल आमोद प्रमोद तक सिमट कर नहीं रह जाते हैं। इन पर्वों में धार्मिकता के साथ वैज्ञानिक पुट भी कूट-कूट कर भरे रहते हैं। ऐतिहासिक, सामाजिकता के साथ इनकी महत्ता, व्यापकता एवं श्रेष्ठता बढ़-चढ़कर परिलक्षित होती है। वर्षा ऋतु के पश्चात् शीत ऋतु के आगमन पर कुछ रोगों की उत्पत्ति तथा इनका निराकरण लिपाई-पुताई, नवपिरधानों रसायन युक्त भोज के रूप में करते हुए पाँच दिन तक

दीपावली मनाते हैं। वहीं वसन्तागमन के कारण जन्म लेने वाले रोगों के शमन हेतु तथा नई आई फसल के यवों से देवयज्ञ करने व रबी फसलों के पकने काटने की तैयारी का सूचक भी होली पर्व है।

संस्कृत में अग्नि में भूने हुए अर्द्ध पक्व अन्न को होलक कहते है।

**तृणाग्नि भ्रष्टार्द्ध पक्व शमी धान्यं होलकः।**

वही भाव प्रकाश में आया है।

**अर्द्धपक्व शमी धान्य स्तृण भ्रष्टैश्च होलकः**
**होलकोऽल्पानिलो भेदः कफ दोष श्रमापहः।**
**भवेद यां होलको यस्य स तत्सदगुणो भवेत।।**

भावार्थ= तिनकों की अग्नि में भूने हुए अधपके शमी धान्य (फली वाले अन्न) को होलक (होला) कहते हैं। होला स्वल्पवात है और मेद (चर्बी) कफ और श्रम (थकान) के दोषों का शमन करता है। जिस-जिस अन्न का होला होता है उसमें उसी-उसी अन्न का गुण होता है। वहीं इन अग्निभूने धानों को खाने से दाँत सम्बन्धित रोगों का भी शमन होता है। होलकोत्सव होलों और उसके बने हुए सतुओं के उपयोग के लिए उदिष्ठ है।

वैदिक रीत्यानुसार हमारे भारत में यह प्रथा चली आई है कि नवीन वस्तुओं को देवों को समर्पण किए बिना अपने प्रयोग में नहीं लाया जाता। जिस प्रकार मानव देवों में ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार भौतिक देवों में अग्नि सर्वप्रधान है। वह विद्युत्रूप में ब्रह्माण्ड में व्यापक है। वही भूतल पर साधारण अनल, जल में बडवानल, तेज में प्रभानल, वायु में प्राणापानानल और सर्व प्राणियों में वैश्वानर के रूप में वास करता है। यही कारण रहा है कि भारत में अग्नि के बिना कोई संस्कार पूर्ण नहीं होते हैं।

देवयज्ञ का प्रधान साधन भौतिक अग्नि को माना है। जो सब देवों का दूत देवदूत के नाम से प्रसिद्ध है। जो निष्पक्ष रूप से देवों को होमे हुए द्रव्य पहुँचाता है। इसलिए हमारे भारत में नवागत अन्न सर्वप्रथम अग्नि को ही अर्पित किए जाते हैं। वही मानव देव ब्राह्मणों को भेंट करके अपने उपयोग में लाने की रीत रही है। यही कारण रहा है कि भारत में प्रथम अन्न या अन्य वस्तु के आते ही (फल-सब्जी आदि) प्रथम घर लाने से पूर्व पूज्यों को अर्पण करते रहे हैं। आज भी ग्रामीण अंचलों में यह प्रथा जीवित है।

वेद में भी स्पष्ट शब्दों में कहा है- **केवलाघो भवति केवलादी,** अकेला खाने वाला पाप खाता है। मनुस्मृति में भी मनु महाराज ने खुले हृदय से यह लिखा-

**अघं स केवलं भुङ्क्ते यः पचत्यात्मकारणात्।**
**यज्ञ शिष्टाशनं ह्येतत्सतामन्नं विधीयते।।** - मनु.३/११८

अर्थ- जो पुरुष केवल अपने लिए भोजन पकाता है, वह पाप भक्षण करता है। यज्ञ शेष या हुतशेष ही सज्जनों का भोक्तव्य है।

एक समय था भारत जहाँ की एकता की बात विश्व के लिए

एक मिसाल थी। तब प्रत्येक काम में सामूहिक रूप से सम्मिलित नवसस्येष्टि होती थी। उसमें सब लोग अपने-अपने घरों से यवादि आहनीय पदार्थ लाकर चढ़ाते थे। काष्ठ की व्यवस्था भी सामूहिक रूप से किया करते थे। कन्याएँ छोटे-छोटे उपले विशेष रूप से थेप कर उनकी माला (बडबुल्यो की माला) होली भावर पर चढ़ाती थीं। वही वर्तमान में काष्ठ और कण्डों के ढेर की होली जलाने की प्रथा शेष रह गई है। उसमें केवल गेहूँ की बालियाँ भून ली जाती हैं। आहनीय सामग्री का हवन तो वर्तमान में लुप्त हो गया। प्राचीन समय में आषढ़ी नवोन्नेष्टि द्वारा देव पूजन, विध्वतसमादर वायु संशोधन, गृह परिमार्जन तथा नवीन वस्त्र परिवर्तन धार्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप था।

पलाश के फूलों को सार्वजनिक रूप से इकट्ठा कर बड़े-बड़े कढावों, कुण्डों में भिगा दिया जाता था। चतुर वैद्यों द्वारा जड़ी-बूटियों के साथ खुशबू हेतु सामग्रियाँ डाली जाती थीं व होली की गेर नगर में गान-वाद्यो द्वारा आमोद-हर्षोल्लास के साथ निकलती थी। सप्रेम सम्मेलन और परस्पर प्रेम परिवर्धन का बड़ा उपयुक्त अवसर कोई खोना नहीं चाहते थे। जगह-जगह शुद्ध गुलाओं से, बड़े-बड़े कुण्डों और कढावों में पलाश (गुलतेवडी, टेसू) के फूल जो एक दो दिन पूर्व ही चतुरजनों या वैद्यों की देखरेख में गला रखे थे उस जल से जो केसरिया रंग का होता था, खूब होली खेलते थे। ज्वर के रोगी, चर्मरोग से ग्रसित को विशेष कर उस जल से स्नान कराया जाता था। परिणाम यह होता था कि उसे फिर कभी न जो ज्वर होता था न ही मोतीझरा (टॉयफाइड)।

इन दिनों लोग ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा भूल स्वच्छ हृदय से आपस में मिलते थे। हाँ किसी कारण से किसी में मनमुटाव हो गया था तो होली पर अग्नि को साक्षी मान उसे वही भस्मसात कर गले मिल फिर एक हो जाते थे। हितैषी भी प्रयास कर सुलह करा एक करा देते थे। इस दृष्टि से होली प्रेम प्रसार का पर्व था। जो दो टूटे हृदयों को जोड़ती एकता

का पाठ पढ़ाती। होली का पर्व वर्ष के अन्त में फागुन पूर्णिमा को मनाया जाता है। होली और धूलि शब्द यह संकेत देते हैं कि 'जो होली सो होली उस पर डालो धूलि।' वर्ष के भीतर हमारे परिवारिक एवं सामाजिक जीवन में यदि कुछ मनोमालिन्य एवं कटुता, विरोध की स्थिति आ गई हो तो उमंग के साथ हम सभी प्रवेश करें। व ध्यान रखें जीवन में फिर कभी मन, वचन, कर्म से किसी को आहत न करें, कोई आहत न हो।

होली को लेकर यह भी कहा जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकश्यपु नाम के दैत्य के पुत्र प्रह्लाद से होली का संम्बन्ध है। उसने अपने पुत्र को ईश्वर भक्ति करने, ईश्वर का नाम भजने पर तरह-तरह के कष्ट दिये। उसे मारने हेतु कई प्रयास किये, पर प्रह्लाद हर बार बचता रहा। फिर प्रह्लाद को मारने के लिए उसकी बुआ होलिका को बुलाया गया। होलिका को वरदान था कि वह आग में नहीं जल सकती है। इसलिये वह फाल्गुन पूर्णिमा को अग्नि स्नान करती थी। वह प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। प्रह्लाद तो बच गया परन्तु वह जल गई। इस खुशी में भी हर वर्ष होली पर्व मनाते आ रहे हैं।

होली का पर्व आनन्द और उत्साह का पर्व है जो राष्ट्र जीवन में, पारिवारिक व सामाजिक जीवन में विघटन, बैर, विरोध व मनोमालिन्य की परिसमाप्ति कर सभी परिजनों, सामाजिक सभ्यों, राष्ट्र के नागरिकों को हार्दिक प्रेम, सदभाव और आत्मीयता के रंग में रंग देता है। आओ, स्नेह सौहार्द के गुलाल से, आत्मीयता के गहरे मनभावी रंगों से होली खेलें। फाल्गुन में एक दूजे के हो जाएँ। इति शुभम्।

– डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी

वर्ष २०१६ की **सत्यार्थ भूषण** पुरस्कार विजेता

धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा ( गुजरात )

## आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

## "सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

### कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक ( १ ) के स्थान पर चार ( ४ ) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - ( अ ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - ( ब ) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - ( स ) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - ( द ) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन ( लाट्री द्वारा ) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली

दृष्टिकोण

# दलित कौन?

टंकाराश्री अरुणा सतीजा

आज जातिवाद के नाम पर सारा देश अशान्त है। देश में चारों ओर हाहाकार मच रहा है। हैवानियत का ताण्डव नाच हो रहा है। आगजनी की घटनाएँ तो साधारण सी बात हैं जबकि ऐसी घटनाओं में अरबों-खरबों रुपये की चल व अचल सम्पत्ति जल कर राख हो जाती है। अहित व हानि किसकी होती है? देश की/राष्ट्र की व समाज की। वैसे समझा जाए तो अप्रत्यक्ष रूप से हानि होती है- हमारी- तुम्हारी व हम सब की। सबसे अधिक शर्मनाक व दुःखद बात तो यह है कि विश्व में देश की साख गिरती है, देश कमजोर होता है क्योंकि देशवासी निजी स्वार्थ के लिए परस्पर लड़ रहे हैं। उनके हृदयों में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या-द्वेष व घृणा की आग जल रही है। ऐसी छोटी-छोटी चिंगारियाँ कभी भी विनाशकारी हो सकती हैं। इसके दूरगामी परिणाम कितने भयंकर होंगे, कल्पना नहीं कर सकते।

आओ इतिहास के कुछ पन्नों को उलट कर देखें। जातिवाद कोई समस्या नहीं है परन्तु सदा समस्या रही है। जब तक लोगों का जनजीवन वेदानुकूल रहा तब तक वर्ण व्यवस्था राष्ट्र व समाज के लिए कल्याणकारी रही क्योंकि इसका आधार कर्म था जन्म नहीं। कोई भी व्यक्ति किसी कुल व जाति में उत्पन्न क्यों न हुआ हो पर वह योग्यता के आधार पर चारों में से किसी भी वर्ण को चुन सकता है। वैदिक काल में कई ऋषि निम्न कुल में जन्मे थे जैसे जाबाल ऋषि चण्डाल कुल से, विश्वामित्र क्षत्रिय कुल से, मातण्ड ऋषि चाण्डाल से ब्राह्मण हो गये।

मध्यकाल में वेदों की शिक्षा पूर्णतया विलुप्त हो गई। वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म न होकर जन्म हो गया। जब पूरा समाज चार वर्णों में बँटा हुआ था तो उनमें से तीन सवर्ण और एक अवर्ण क्यों?

समाज में विषमता की दीवार खड़ी हो गई। झूठे धर्म के नाम पर ऊँच-नीच की भावना पनपने लगी। एक दूसरे द्वारा बनी रोटी खाने तथा मात्र एक-दूसरे से छू जाने मात्र से धर्म नष्ट हो गया। ब्राह्मणों ने मात्र अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए समाज में ऐसा विष फैला रखा था। धीरे-धीरे छुआछूत तथा परस्पर घृणा की भावना पनपने लगी। चौथे वर्ण के लोग दलित, अछूत व दरिद्र जैसे तुच्छ नामों से पुकारे जाते थे। यही भेदभाव भविष्य में पराधीनता के मुख्य कारणों में से एक था। विदेशियों ने सामाजिक विषमता का भरपूर लाभ उठाया। इन लोगों की स्थिति बद से बदतर होती गई।

१९वीं शताब्दी में इन दलितों की दशा सुधारने के लिए सन्त महात्माओं तथा समाज सुधारकों ने भरसक प्रयास किए।

इनमें से मुख्य थे महर्षि दयानन्द सरस्वती। जो दिन-रात इनके दुःखों को दूर करने में लगे रहते थे। महर्षि का मुख्य लक्ष्य था इन दलितों एवं पीड़ितों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना। इनके पक्ष में अनेकों तर्क दिए, वाद-विवाद हुए ताकि लोग इस वर्ण के लोगों की महत्ता को समझ सकें। जैसे उनका कहना था जिस प्रकार पैरों के बिना मनुष्य का, शरीर अपंग हो जाता है उसी प्रकार इन सेवकों के बिना समाज व देश का विकास असंभव है। चारों वर्ण एक दूसरे के पूरक हैं। सभी आर्य हैं, मानव हैं भाई-भाई हैं। इन सेवकों के बिना समाज व राष्ट्र का विकास असंभव है।

वेद मानवों को पारस्परिक घृणा से दूर रहने का उपदेश देता है- 'नीचे गिरे हुए पाप तथा अपराध करने वाले पतित व्यक्तियों को बार-बार ऊपर उठाने का प्रयास करते हुए उनकी दूषित आत्मा को पवित्र करो'।

महर्षि देव दयानन्द ने लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। उन्होंने जातिवाद के सही स्वरूप का वर्णन अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया ताकि लोग सच को जान सकें। उन्होंने लिखाः-

'वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार होती है न कि जन्म से। शूद्र कुल में उत्पन्न होकर कोई भी व्यक्ति क्षत्रिय, वैश्य और ब्राह्मण हो सकता है। रज-वीर्य के संयोग से कोई भी ब्राह्मण शरीर नहीं बनता, मात्र मानव-शरीर का निर्माण होता है। उत्तम-गुण-कर्म-स्वभाव वाला व्यक्ति चाहे चारों वर्णों में से किसी में भी जन्मा हो वह ब्राह्मण होता है। इसके विपरीत जो मूर्ख है वह शूद्र है चाहे उसका जन्म किसी भी वर्ण में क्यों न हुआ हो? परन्तु सबके साथ व्यवहार एक जैसा करना चाहिए। चारों वर्णों के सहयोग के बिना समाज अधूरा है, अपंग है।'

समाज के लोगों की आँखें खुलीं धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा। आज बच्चों में परस्पर कोई भेदभाव नहीं है। देश आजाद हुआ। संविधान निर्माताओं ने उनके दुःख दर्द को

समझा। आरक्षण के नाम से इन्हें विशेष सुविधाओं तथा अधिकारों से दस वर्षों के लिए नवाजा गया। संविधान निर्माताओं ने दिल से काम लिया दिमाग से नहीं। इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को भूल गए कि वह ऐसा करके पुनः वर्ग विभाजन की ऐतिहासिक भूल को दोहरा रहे हैं। जिसके दूरगामी प्रभाव कितने भयंकर हो सकते हैं जो आज हमारे सामने आ रहे हैं।

सभी राजनैतिक दलों को अपनी-अपनी सफलता के लिए मानो, आरक्षण रूपी जादू की छड़ी मिल गई हो। इसका उन्होंने वोटों के रूप में भरपूर लाभ उठाया। पिछड़े वर्गों में से कुछ चतुर लोगों ने ही इसका पूरा लाभ उठाया। वास्तव में दलितों की स्थिति वैसी की वैसी बनी हुई है। सच तो यह है कि दलित बच्चों को आरक्षण की नहीं संरक्षण की आवश्यकता है। उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करो, इनको प्रगति के साधन व सुविधाएँ दो। समाज में मान सम्मान व समानता का व्यवहार हो। इन्हें शिक्षा व आर्थिक सुविधाएँ दो। उनकी उन्नति के सारे दरवाजे खोल दो। अयोग्यता को प्रोत्साहन देकर उन्हें अपंग मत बनाओ। उन्हें होनहार बनाओ परन्तु देश के होनहारों की प्रतिभा, योग्यता व क्षमता को कुण्ठित मत होने दो। अन्यथा समाज पुनः बटेगा, बिखरेगा समस्याएँ बढ़ जायेंगी तथा देश का विकास रुक जायेगा। आज देश में सबको उन्नति के अवसर व अधिकार प्राप्त हैं। देश के प्रत्येक होनहार प्रतिभावान बच्चे को उसे अपने पंखों के दम पर आकाश में ऊँचाइयों को छू लेने दो।

आज प्रतिभा रो रही है, दम तोड़ रही है। दैनिक भास्कर की रिपोर्ट के आधार पर छह प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले बच्चों का आई.आई.टी में प्रवेश हो जाता है आर्थिक सहायता अलग से मिलती है परन्तु ९८/९९ प्रतिशत की योग्यता रखने वाला बच्चा खड़ा-खड़ा देख रहा है। कितनी हृदय विदारक पीड़ा है। वह समाज से, राष्ट्र से आरक्षण के नाम पर रक्तपात करने वालों से जवाब माँग रहा है। दलित कौन? मैं या छह प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाला एस.सी. दलित का सही अर्थ है शोषित। बहुत गर्व की बात है अगर एक दलित का बेटा कलक्टर बनता है परन्तु उस कलेक्टर का बेटा कहता है कि मैं भी दलित बेटे की बेटी कहती है कि मैं भी दलित। इसी प्रकार सम्पन्न से सम्पन्न व्यक्ति के बच्चे कहते हैं हम दलित। कैसी विडम्बना है एक सम्पन्न, शिक्षित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति का परिवार कैसे दलित हो सकता है। देश के कर्णधारो देशवासियों को जवाब दो- दलित कौन है?

आरक्षण की लूट मची है। अधिकांश सम्पन्न जातियाँ भी येन केन प्रकारेण से आरक्षित होना चाहती हैं। आरक्षण न होकर बाबा जी का लंगर हो गया। आरक्षण के नाम पर राष्ट्र को खण्डित व कमजोर करने वालो अपनी भावी पीढ़ी पर दया करो। वह निर्बल नहीं सबल है। उन्हें आलसी, मन्दबुद्धि तथा अपंग मत बनाओ। वैसाखियों के सहारे चलने वाला व्यक्ति चार कदम भी मुश्किल से चल पाता है फिर गिर जाता है। भावी पीढ़ी तुम्हें कभी माफ नहीं करेगी। घृणित शब्द से याद किए जाओगे। यदि स्वयं के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हो तो ऐसे अभिभावक बनो जैसे एक स्कूल में एक बच्चे के पिताजी प्रधानाध्यापक जी के पास आये और पूछा जब मेरा बच्चा सफल (पास) होने की योग्यता ही नहीं रखता तो आपने उसे कैसे पास कर दिया। ऐसे माँ-बाप के बच्चों का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल होता है।

अब अति हो चुकी है पानी सिर से ऊपर जा रहा है। समय की माँग है भारत की कल्याणकारी वैदिक व्यवस्था जो अभी तक मरण-व्यवस्था बन चुकी है, इसे पुनःजीवित करने की तथा जन जागृति की अति आवश्यकता है। इस अभेद्य दीवार को गिराना किसी सरकार के लिए संभव नहीं है क्योंकि राजनैतिक दल एक दूसरे के विरोधी हैं। यदि समय पर नहीं चेते तो राष्ट्र एक बार पुनः खण्डित हो जायेगा। फिर किससे पूछोगे दलित कौन-जवाब दो?

**जो हो गया उसे सोचा नहीं करते,**
**जो मिल गया उसे खोया नहीं करते,**
**हासिल होती है उन्हें सफलता जो**
**वक्त और हालात पर रोया नहीं करते।।**

फ्लैट नं. १०१ बी-९
ध्रुव मार्ग, तिलक नगर,जयपुर
दूरभाष नं. ९४६०१८३८७२

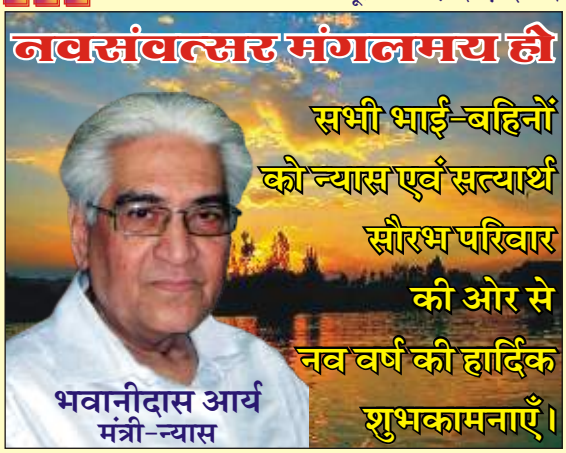

# सरदार भगत सिंह

भारतीय स्वातन्त्र्य समर में देश के कई क्रान्तिकारी वीर सपूतों की याद आज भी हमारे अंदर जोश और प्रेम की लहर पैदा कर देती है। एक वह समय था जब लोग अपना सब कुछ त्याग कर अपने देश को आजाद कराने हेतु अपना बलिदान 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाते-लगाते स्वयं को बलि वेदी पर चढ़ा देते थे और आज शासकों की दया से ६०-६५ साल के शासन में 'वन्दे मातरम्' पर सभा, जुलूसों, सार्वजनिक स्थानों पर (जिस नारे से देश आजाद हुआ उस पर ही) प्रतिबन्ध लग गया।

देशभक्ति की जो मशाल हमारे देश के क्रान्तिकारियों ने जलाई थी उसकी उपेक्षा तत्कालीन कांग्रेस के नेताओं द्वारा की गई। गरम दल-नरम दल के मतभेदों के कारण, क्रान्तिकारियों का सहयोग करना तो दूर उल्टे उन्हें बदनाम और हतोत्साहित कर उन्हें वो सम्मान नहीं दिया, जो दिया जाना चाहिए। असल मायनों में वीरता और पराक्रम की जो नींव वीर क्रान्तिकारियों ने रखी थी उसी की वजह से देश आजाद हुआ। हाथ जोड़कर, भजन गाकर, सूत कातने से आजादी नहीं मिली। यदि देश को आजादी ऐसे ही मिल जाती तो १८५७ से १९४७ तक लाखों देश भक्तों ने बलिदान क्यों दिया। अंग्रेजों की जेल में यातनायें सहीं वो क्या है? यदि अहिंसक असहयोग आन्दोलनों से आजादी मिलती है तो पाक अधिकृत कश्मीर को ये आजाद क्यों नहीं कराते, जहाँ की जनता भारत में मिलने को तैयार है तथा कश्मीर समस्या हल क्यों नहीं करते?

मित्रो! हर देश स्वाधीनता के लिए त्याग, तपस्या (कर्मठता) और बलिदान माँगता है। ऐसे ही देशप्रेम, वीरता और साहस की मिसाल थे शहीद क्रान्तिकारी वीर सरदार भगत सिंह जिनका २३ मार्च को बलिदान दिवस है। २३ मार्च १९३१ को देश की आजादी की बलिवेदी पर वे आहूत हुए।

सरदार भगत सिंह का जन्म २७ सितम्बर १९०७ को जालन्धर जिले के बंगा नामक ग्राम में हुआ। यह परिवार जन्म जात, क्रान्तिकारी परिवार था। इनके दादा श्री अर्जुन सिंह ने सिख होते हुए भी महान् समाज सुधारक, वेदोद्धारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती से यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण किया था। यही नहीं इनके पिता तथा चाचा अजीत सिंह ब्रिटिश हुकूमत के कट्टर विरोधी होने के कारण जेल में बंद थे। जिस दिन भगत का जन्म हुआ उसी दिन दोनों के जेल से छूटने का समाचार मिला। अतः दादी ने प्रसन्न होकर बालक का नाम भागोंवाला रख दिया जो बाद में भगत सिंह प्रसिद्ध हो गया।

बचपन में जब खेत में गए तब पिता को कुछ बीज बोते हुए देखा तो पिता से कहा कि पिताजी क्या बन्दूक पिस्तौल की खेती नहीं की जा सकती? चूँकि कृपाण-बन्दूक आदि चलाने का प्रारम्भिक शौक था। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई। १० वर्ष की अवस्था में लाहौर डी. ए. वी. स्कूल में दाखिला प्राप्त किया। वहीं पर गाँधी बाबा के असहयोग आन्दोलन से विद्रोह की भावना जागृत हो गई जो बाद में ज्वालामुखी बनकर अंग्रेज सरकार के लिए सिर दर्द बन गई। उन्होंने असहयोग आन्दोलन से प्रेरित होकर अपना नाम नेशनल कॉलेज, लाहौर में लिखा दिया जहाँ उनकी मित्रता भगवती चरण बोहरा, यशपाल, सुखदेव से हुई। क्रान्तिकारी गतिविधियों के प्रणेता उसी कॉलेज के प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालंकार (गुरुकुल कांगड़ी) थे। नये खून ने वहाँ एकत्रित होकर 'नौजवान भारत सभा' की नींव रखी, जहाँ भारत से अंग्रेजों को भगाने के लिए कार्यक्रम पर विचार किया जाता था। इस गुप्त कार्य हेतु सरदार भगत सिंह ने आगरा, कानपुर, पटना, कलकत्ता के निरन्तर कई चक्कर लगाये।

देश की स्वतंत्रता का बिगुल बजने लगा। नवयुवक संघर्ष की तैयारी में जुट गये। लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन के विरोध में एक विशाल जुलूस का नेतृत्व किया। उस विशाल जुलूस पर अंग्रेजों ने लाठीचार्ज किया। भीड़ में भगदड़ मच गई। लाला जी पर लाठियों के कई वार हुए। वे घायल हो गए। उनके मुख से निकला मेरे शरीर पर पड़ी एक एक लाठी अंग्रेज साम्राज्य के नाश के ताबूत की एक एक कील होगी। कुछ दिनों बाद लाला जी का देहावसान हो गया। क्रान्तिकारियों की गुप्त बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि खून का बदला खून।

जिस अधिकारी ने लाठीचार्ज का आदेश दिया था उसकी

हत्या के लिए योजनानुसार भगतसिंह, राजगुरु पुलिस दफ्तर के सामने पेड़ की आड में खड़े हो गए। चन्द्रशेखर आजाद ने डी.ए.वी कॉलेज की चाहरदीवारी पर निगरानी रखी। सान्डर्स ने अपने कार्यालय के निकट मोटरसाइकिल स्टार्ट की, पेड़ की आड़ में राजगुरु ने अपना अचूक निशाना साधकर कनपटी पर गोली दागी। कहीं जिन्दा न रह जाय सरदार भगतसिंह ने अपनी पिस्तौल से गोली दागी। ट्राफिक पुलिस इंस्पेक्टर फर्न व चन्दन सिंह हवलदार व अन्य सिपाही ने पीछा किया। चन्द्रशेखर आजाद ने चेतावनी दी खबरदार पीछा मत करो, मारे जाओगे। पर चन्दन सिंह नहीं माना। चन्द्रशेखर ने पैरों में गोली मारी। दूसरे दिन दीवारों पर पर्चे चिपके हुए थे कि हमने लाला जी की हत्या का बदला लिया है। सभी वीर क्रान्तिकारी अंग्रेज पुलिस व सी.आई. डी. की आँखों में धूल झोंकते हुए आगरा, कानपुर, कोलकता पहुँच कर भूमिगत हो गए।

असेम्बली में भारतीयों के अधिकारों के हनन के लिए सरकार एक कानून लाना चाहती थी। जनता के भारी विरोध के बावजूद सार्वजनिक सुरक्षा और औद्योगिक विवाद बिलों पर वायसराय की स्वीकृति लेने की चेष्टा की गई। जब बहरी अंग्रेज सरकार ने जनता की किसी बात को नहीं सुना तो बहरों को अपनी आवाज सुनाने के लिए असेम्बली में बम का सहारा लेने के लिए मजबूर हुए। निरपराध को मारने की कोई चेष्टा नहीं की। ८ अप्रैल १९२९ को साहसी सरदार भगतसिंह और वीर बटुकेश्वर दत्त अपनी जेबों में पिस्तौल और बम छिपाये सरकारी सुरक्षा कर्मियों को धता बताते हुए

असेम्बली हॉल की दर्शक दीर्घा में बैठ गये। गृहमंत्री सर जान शूटॉन ने ज्यों ही खड़े होकर घोषणा की कि सार्वजनिक सुरक्षा ओर औद्योगिक विवाद बिल वायसराय की विशेष अनुमति से कानून बना दिए गए हैं उसी समय तत्काल भगतसिंह ने एक बम शूटॉन के पास दीवार पर मारा। ठीक उसी समय बटुकेश्वर दत्त ने भी उसी स्थान पर बम फेंका। सभा भवन में विस्फोट के बाद धुँआ ही धुँआ छाने लगा। दर्शकों और हॉल में भगदड़ मच गई। सभी के चेहरे भय से त्रस्त थे। सरदार भगत सिंह ने जॉन शूटॉन पर गोलियाँ दागी पर वे डेस्क में ही लगीं। शूटॉन डेस्क के पीछे छुप गये थे। अभी भगत सिंह के पिस्तौल में छह गोलियाँ और शेष बची थी। पर उन्होंने किसी को निशाना नहीं बनाया। अगर चाहते तो उस भगदड़ में आसानी से भाग सकते थे किन्तु वो वहीं खड़े रहे और अंग्रेज पुलिस ने उन्हें आसानी से बन्दी बना लिया। कुछ इतिहासकार इसे उनकी भयंकर भूल बताते हैं। लेखक के विचार में ऐसा आतंकी और कायर करते हैं। वो आतंकी नहीं थे। जब तक बन्दी नहीं बने दोनों इन्कलाब जिन्दाबाद, अंग्रेज साम्राज्य वाद का नाश हो, का नारा लगाते रहे।

७ अक्टूबर १९३० को जज ने अपना फैसला सुनाते हुए सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा दी तथा अन्य को आजन्म कैद व कालेपानी की सजा दी। ध्यान रहे सान्डर्स वध व बम्ब काण्ड की सुनवाई साथ साथ चली। फांसी की सजा को रद्द करने के लिए स्थान स्थान पर आन्दोलन, जुलूस आदि निकाले गए प्रदर्शन किए, पर सब निष्फल रहे। काश! गाँधी ने भी थोड़ा प्रयत्न किया होता।

२३ मार्च १९३१ को लाहौर जेल में फांसी देनी थी किन्तु पंजाब व देश का वातावरण इतना उत्तेजित था कि अंग्रेजों को आशंका हुई कि २३ मार्च को सारी जनता आक्रोश में जेल पर ही न चढ़ आये अतः डर के मारे २३ मार्च की रात्रि में ही फांसी दे दी गई तथा रात्रि में ही शवों पर मिट्टी का तेल डालकर सतलज नदी के किनारे जला दिया गया। शव परिजनों व जनता को नहीं सौंपे। अमर शहीदों ने फांसी के तख्ते पर जाते समय गीत गाया 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला, इसी रंग में रंगे शिवा ने, माँ का बन्धन खोला, मेरा रंग दे बसन्ती चोला।' तीनों शहीदों ने फंदा लगाने से पूर्व गगन भेदी नारे लगाये। 'इन्कलाब जिन्दाबाद', 'अंग्रेजी साम्राज्यवाद' का नाश हो।

आज के सत्ता सुख भोगी, घोटाले बाज नेता त्याग, तपस्या, बलिदान के रंग भगवा से बहुत चिढ़ते हैं। शिक्षा में कहीं भी सरकार सुधार का प्रयत्न करती है तभी भगवाकरण की तोप

चला देते हैं। ये सही में मैकाले और अंग्रेजों के मानस पुत्र हैं। इसका परिणाम स्पष्ट दिखाई दे रहा है। स्वतंत्र देश में खुले आम नारे लगाये जाते हैं- पाकिस्तान जिन्दाबाद, भारत के सौ टुकड़े करेंगे। किस में रहोगे? कितने अफजल मारोगे, घर घर से अफजल निकलेगा, भारत की बरबादी तक जंग रहेगी। कश्मीर की आजादी लेकर रहेंगे, केरल की आजादी लेकर रहेंगे, बंगाल की आजादी लेकर रहेंगे। आज हम शर्मिन्दा हैं, अफजल तेरे कातिल जिन्दा हैं। ये नारे लगभग सभी चैनलों पर सुनाये तथा दिखाये गये। खेद है ये नारे राहुल व केजरीवाल ने नहीं सुने और वे ऐसे देश द्रोह के नारे लगाने वालों के साथ खड़े हैं। जीटीवी ने प्रमुखता से दिखाया। बधाई का पात्र है। किसी ने कहा था कि- 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले, वतन पर मिटने वालों के बाकी यही निशां होंगे।' पर अब ६०-६५ साल में शहीदों को ही भुला दिया गया, मेलों की बात तो दूर दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि शासकों के प्रथम नेता से लेकर अन्तिम इकाई तक शहीदों को भुला रही है। तमाम त्याग, तपस्या, बलिदानों से देश स्वतंत्र हुआ पर दुर्भाग्यवश देश आजाद होने के बाद कांग्रेस ने अंग्रेजों के समय की शिक्षा पद्धति वही कानून, अंग्रेजी भाषा में कामकाज ही कायम रखे। सारे दोष तो सत्तारूढ़ पार्टी ने ६०-६५ साल से अपनाये हैं। तुष्टीकरण और जातिगत आरक्षण का रोग और दे दिया। अब समय आ गया है कि देश की जनता को देश और संस्कृति के प्रति जागरूक होना पड़ेगा तथा सत्ता लोलुप भारतीय संस्कृति-द्रोहियों को पहचानना पड़ेगा। अन्यथा....

..

पंडित रामदेवशर्मा
६-एच-१६, महावीर नगर,वि.यो.
मोबाइल नं. ९४६०६७६५४५

पूरा नाम-
चलभाष-

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। ( चतुर्थ समुल्लास पर आधारित )- पुरस्कार प्राप्त करिये

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | र्द | १ | | २ | त | | ३ | न्या | ३ |
| ४ | र | | त्मा ४ | | ५ अ | | हो | ५ | |
| ६ | | मा ६ | | र | ६ | | | ७ | न ७ |

### संकेत ( बाएँ से दाएँ ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो अविद्या के भीतर खेल रहे हैं वे अन्धे के पीछे अन्धे की भाँति किस अवस्था को प्राप्त होते हैं?
२. अकृत परमात्मा केवल किससे प्राप्त नहीं किया जा सकता?
३. चलते समय दृष्टि नीचे रखकर चले ये निर्देश किसे दिए गए हैं?
४. संन्यासी ज्ञान स्वात्मा को किसमें लगावे?
५. संन्यासी शिखादि के अतिरिक्त किस चिह्न को छोड़े दे?
६. संन्यासी इन्द्रियों को किससे रोके?
७. न्यून से न्यून कितने प्राणायाम अवश्य करें?

**सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/१७ का सही उत्तर**

| | | |
|---|---|---|
| १. प्रिय | २. दुःख | ३. सात |
| ४. वैश्य | ५. छः | ६. गृहस्थ |
| ७. वेदानुकूल | ८. स्वयंवर | |

**''विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''**

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०१७

# आम बजट २०१७

# Save India From Corruption

## भ्रष्टाचार के विरूद्ध युद्ध का शंखनाद!

आठ नवम्बर २०१६ की रात्रि ८ बजे प्रधान मंत्री द्वारा देश की ८६% मुद्रा के एक झटके में विमुद्रीकरण (५०० व १००० के नोट बंदी) की घोषणा के बाद अब केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों के मंत्री श्री अरुण जेटली ने भी संसद में वर्ष २०१७-१८ का आम बजट पेश करते हुए अनेक कीर्तिमान बना डाले हैं। उनके बजट भाषण में देश की रग-रग में व्याप्त भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने के संकल्प की अभिव्यक्ति भी स्पष्ट नजर आती है। जहाँ आयकर की दर १० से घटाकर ५ प्रतिशत कर ईमानदार करदाताओं या वेतनभोगी कर्मचारियों या यूँ कहें कि उस तबके को जो नोटबंदी से सर्वाधिक परेशान हुआ, किन्तु धैर्य नहीं खोया, को, विशेष राहत प्रदान की है वहीं, विविध सरकारी योजनाओं का लाभ गरीबों, किसानों, कामगारों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों, युवाओं, महिलाओं तथा समाज के अन्य निचले तबकों तक सीधा पहुँचाए जाने हेतु विविध प्रबन्ध भी साफ देखे जा सकते हैं। बेईमानों, भ्रष्टाचारियों तथा उनके सहयोगियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई का ऐलान करते हुए गलत जानकारी देने वाले लेखाकारों या मर्चेंट बैंकों या पंजीकृत मूल्य आँकने वालों पर भी उनके प्रत्येक दोष के लिए १०००० रुपये के दण्ड का प्रावधान किया है। अब तक अधिकांश राजनैतिक पार्टियाँ आयकर विवरणी दाखिल करने में कोताही बरतती थीं या भरती ही नहीं थीं। किन्तु, अब सभी को समय पर इसे दाखिल करना अनिवार्य कर दिया गया है अन्यथा उन्हें मिलने वाली छूट समाप्त हो जाएगी। इनके अलावा तीन लाख रुपए से अधिक के नकद लेनदेन पर पूर्ण प्रतिबन्ध भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध किसी बड़े युद्ध की घोषणा से कम नहीं लगता है।

सम्पूर्ण भारत जानता है कि भ्रष्टाचाररूपी रावण की लंका यदि जलानी है तो राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार पर नकेल कसनी ही होगी। जनता का प्रतिनिधित्व कर, उसे सुविधा/असुविधा देने वाले, उसके लिए कानून बनाने वाले और विश्वभर में भारत की छवि प्रस्तुत करने वाले हमारे जन प्रतिनिधि ही तो हैं। जब ये जन प्रतिनिधि ही अपराध क्षेत्र से या आपराधिक प्रवृत्ति से या गैर कानूनी तरीके से जनता की खून पसीने की कमाई का दुरुपयोग कर संसद चलाएँगे तो वैसा ही तो भारत बनेगा। यह बात आश्चर्यजनक किन्तु सत्य है कि देश में रजिस्टर्ड कुल राजनैतिक पार्टियों में से महज ४ फीसदी राजनैतिक पार्टी ही अपने चंदे का ब्यौरा चुनाव आयोग को सौंपती हैं। चुनावों का दौर प्रारम्भ होते ही चंदे का लेन-देन भी निस्संदेह बढ़ जाता है। एक तो केंद्र सरकार के नोटबंदी के फैसले ने ही उन राजनैतिक दलों के लिए बड़ी मुसीबत पैदा कर दी थी जिनको प्राप्त रकम का एक बड़ा हिस्सा चंदे से प्राप्त होता है। और रही सही कसर केन्द्रीय बजट ने पूरी कर दी जिसमें २००० रुपए से ज्यादा लेन देन को कैशलेस बनाने की बात कही गई है। यानि, अब राजनैतिक दलों को नकद चंदे की वर्तमान सीमा (२०,०००रु.) को ६०% घटा कर २००० किए जाने से राजनैतिक पारदर्शिता बढ़ेगी। इससे ज्यादा का चंदा ऑनलाइन या चेक के माध्यम से ही हो सकेगा। चुनाव आयोग नकद चंदे को पूरी तरह से बंद करने की अनुशंसा गत कई दशकों में अनेक बार कर चुका किन्तु गत ६० वर्षों में किसी भी सरकार की हिम्मत नहीं हुई कि वह इस बारे कोई पहल करे।

राजनैतिक सुधारों पर काम कर रही एसोसिएशन आफ डेमोक्रेटिक रिफार्म का कहना है कि देश के राजनैतिक दलों को ६९ फीसदी आय अज्ञात स्रोतों से प्राप्त होती है। चंदे की रकम में पहचान को छिपाने का खेल कितना बड़ा है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा

सकता है कि अघोषित स्रोतों से चंदा जुटाने में समाजवादी पार्टी सबसे आगे है। यह सच है कि समाजवादी पार्टी की कुल कमाई का ८३ फीसदी हिस्सा बेनामी है वहीं दूसरे नंबर पर उसी की सहयोगी पार्टी कांग्रेस है। कांग्रेस को पिछले ११ सालों में कुल आय का ८३ प्रतिशत (लगभग ३३५० करोड़ रुपये) अज्ञात स्रोतों से मिला। उत्तर प्रदेश की तीसरी बड़ी पार्टी के तो इस मामले में हाल ही निराले हैं। बसपा एकमात्र ऐसी राजनीतिक पार्टी है जो कहती है कि उसे किसी ने भी २० हजार से ज्यादा दान दिया ही नहीं। अर्थात् वह किसी एक भी दानदाता का नाम बताने को राजी ही नहीं हुई। लेकिन, कोई पूछे कि बसपा की कुल आय ५ करोड़ से बढ़कर १११ करोड़ आखिर कैसे हो गई है? आंकड़े बताते हैं कि देश की सात राष्ट्रीय पार्टियों को वर्ष २०१५-१६ में २०००० रुपये से अधिक की सीमा में मात्र १०२ करोड़ का चंदा मिला जिसकी कुल रकम १७४४ व्यक्तियों या संस्थाओं ने दी। यानि, चंदे की राशि में पारदर्शिता और लेखा जोखा के मामले में केंद्र में सत्ताधारी भाजपा सबसे आगे है। भाजपा को ६१३ दान दाताओं ने कुल ७६ करोड़ रुपये का चंदा नकद दिया है।

इसके अलावा राजनैतिक दल अब तक ट्रस्ट बनाकर और ट्रस्टों को लेकर आयकर नियमों का फायदा उठाकर बड़े पैमाने पर चंदा हासिल कर लिया करते थे लेकिन २००० रुपए के नियमन से अब यह कारगुजारी भी उन्हें भारी पड़ेगी। गौरतलब है कि वर्ष २०१४-१५ में चुनावी ट्रस्टों ने १७७.५५ करोड़ चंदे के रूप में कमाए हैं और उनमें से १७७.४० करोड़ अलग-अलग राजनीतिक दलों को चंदे के रूप में दिया गया। इन ट्रस्टों को यह पैसा अलग-अलग कम्पनियों से मिला था। गत माह केंद्रीय सूचना आयोग का वह निर्णय जिसमें उसने कह दिया था कि चुनावी न्यासों को मिला चंदा और उनका राजनीतिक दलों को वितरण व्यक्तिगत सूचना के दायरे में नहीं आता है, ने भी राजनैतिक दलों को और निरंकुश बना दिया था।

नकदी को न्यूनतम स्तर पर ला, डिजीधन को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक घोषणाएँ की हैं इसके अलावा राजनैतिक दलों को चंदे के एक नए रूप इलेक्टोरल बॉड का जिक्र भी बजट में किया गया है, जिसे नकद नहीं खरीदा जा सकेगा। हालांकि इसके विस्तृत विवरण की प्रतीक्षा है। नकदी रहित लेनदेन पर अनेक प्रकार की छूट, 'आधार' आधारित भुगतान तथा अनेक सरकारी व अन्य भुगतानों में ऑनलाइन भुगतान के अनिवार्य किए जाने से भी पारदर्शिता बढ़ेगी। अभी हाल ही में लागू किए गए 'भीम' नामक एप को आज १२५ लाख से अधिक लोग प्रयोग कर ही रहे हैं इसके अलावा यूपीआई, यू एस एस डी, आधार पे, आईएमपीएस, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड इत्यादि माध्यमों से वित्त वर्ष २०१७-१८ में नकदी रहित व्यवहारों को २५०० करोड़ रुपए तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। सितम्बर २०१७ तक २० लाख से अधिक पीओएस मशीनें बैंकों की मदद से लगाईं जाएँगीं। हालाँकि जनधन योजना आधार और मोबाइल इन तीन के त्रिकोणीय समीकरण से बहुत कुछ हो चुका है तथापि, अनेक प्रकार की प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से इस मुहिम को और गति मिलेगी। अब तक के बजटों में खासकर चुनावी मौसम में आने वाले बजटों में हमेशा छूट, फ्री और ऋण माफी जैसी घोषणाओं की भरमार होती थी। किन्तु, इस बजट ने लकीर से हट कर मानसून तथा नए वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ से पूर्व ही रेल बजट को शामिल कर गरीबी, शिक्षा, ग्रामीण रोजगार, कृषि, सिंचाई, ढांचागत विकास, सुलभ घर, इत्यादि विषयों पर जोर देते हुए भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक बड़े युद्ध का शंखनाद कर दिया है। अब बारी हम देशवासियों की है कि इस युद्ध में एक वीर सैनिक की भाँति अपना कौशल दिखाते हुए सरकार के साथ कदमताल करें। तभी लौटेगा भारत में राम राज्य।

- विनोद बंसल ( राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप )

## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

| राशि | प्रतियों की संख्या | राशि | प्रतियों की संख्या |
|---|---|---|---|
| एक लाख रु. | दस हजार | ७५००० | ७५०० |
| ५०००० | ५००० | २५००० | २५०० |
| १०००० | १००० | इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे। | |

**आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा।** राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

| भवानीदास आर्य | भंवरलाल गर्ग | डॉ.अमृत लाल तापड़िया |
|---|---|---|
| मंत्री-न्यास | कार्यालय मंत्री | उपमंत्री-न्यास |

# कल्पना की कहानी कल्पना से परे

जिसके बचपन ने ही विषमताओं की कड़वाहट को चखा हो, अपने को दुत्कारा जाता जिसने अपनी नियति समझ ली हो, जो समस्त कुरीतियों का शिकार हुयी हो पर जिसने कभी हार न मानी हो न ही स्वयं में विश्वास खोया हो और उसी अदम्य साहस और पुरुषार्थ के बल पर अपने जीवन को एक दिशा देकर अविश्वसनीय उपलब्धियों को हासिल कर सफलता अर्जित की हो उस हस्ती का नाम कल्पना सरोज है, जिसके संघर्ष की गाथा सहस्रों में आत्म बल का संचार कर सकती है।

कल्पना का जन्म विदर्भ (अकोला जिले में रोपरखेड़ा) में हुआ था तथा पिता एक पोलिस कांस्टेबल थे। उसके तीन बहिन तथा दो भाई थे। परिवार एक पोलिस क्वार्टर में रहता था। कल्पना पढ़ने में तेज थी। आस-पास के धनी तथा तथाकथित सभ्य कहे जाने वाले परिवारों के बच्चों के साथ जब वह खेलती थी तो उनके माता-पिता उन्हें मना करते थे कि वे सरोज के साथ न खेलें न उसके घर जायँ और न ही उसके साथ कोई खाने की वस्तु सांझा करें। यहाँ कल्पना का मासूम बचपन पहली बार भेदभाव की भावना से रूबरू हुआ। इस भेदभाव की इंतहाँ तो तब हुयी जब विद्यालय में भी उसको उसके अध्यापक अलग बैठाते थे। उसको उसके प्रतिभा प्रदर्शन पर प्रोत्साहित करना तो दूर उसे निरुत्साहित करते थे। ऐसे वातावरण में १२ वर्ष की अवस्था और सातवीं कक्षा में ही कल्पना का विवाह कर दिया गया।

ससुराल को लेकर कल्पना ने कोई सुखद कल्पना की हो, ऐसी बात नहीं थी परन्तु उसका ससुराल साक्षात् नरक होगा यह भी उसने नहीं सोचा था। कौन सा ऐसा जुल्म था जो उसे नहीं दिया गया? एक १२ वर्षीय बच्ची ने कौन सा ऐसा दुःख था जो नहीं सहा। घरेलू कार्यों के साथ-साथ मारना-पीटना, भूखा रखना सामान्य चर्या थी। छः मास पश्चात् जब कल्पना के पिता उससे मिलने गए तो जैसे वे उसे पहचान नहीं पाए। उनके अनुसार कल्पना एक जिन्दा लाश बन गयी थी। शायद उनके समाज में यह सब सामान्य हो, परन्तु शायद पुलिसकर्मी होने के कारण कल्पना की स्थिति को पिता सहन नहीं कर पाए और वे उसे घर ले आये। क्या अब सब कुछ ठीक हो गया? जी नहीं, कल्पना कुए से निकली तो जैसे खाई में जा गिरी। उसके समाज में विवाहित लड़की के घर आने से बेहतर तो उसका मर जाना माना जाता था। ऐसी ही मानसिकता से युक्त परिवेश के कारण कल्पना को आगे पढ़ाने की पिता की इच्छा पूर्ण न हो सकी। यही नहीं तानों का क्रम समय के साथ घटने के बजाय बढ़ता ही गया। कल्पना के लिए स्थिति यहाँ तक कठिन हो गयी कि उसे भी अपने जीने का कोई कारण नजर नहीं आने लगा। अपने परिचितों की फुसफुसाहट उसके कानों में गूँजती रहती थी कि शादी के बाद घर आने के बजाय यह मर जाती तो अच्छा रहता। नतीजा यह हुआ कि जब वह एकबार अपनी चाची के यहाँ थी तो अपनी जीवन लीला का अंत करने के लिए उसने अत्यधिक मात्रा में जहर का सेवन कर लिया। चाची को तुरन्त पता चल गया और कल्पना को अस्पताल ले जाया गया। जितनी मात्रा में कल्पना ने जहर पिया था उसका बच जाना चमत्कार से कम नहीं था। शायद विधाता ने उसके लिए कोई महत्वपूर्ण काम सोच रखा था। और यही भविष्य में सच साबित हुआ। जब अस्पताल में कल्पना की आँख खुली तो वह एक बदली हुयी लड़की थी। उसने इस दूसरे जन्म को यूँ ही व्यर्थ न जाने देने का संकल्प किया। अब वह विपरीत परिस्थितियों, कठिनाइयों के सामने समर्पण नहीं करेगी वरन् परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालेगी और इस दृढ़ सोच के साथ उसने फिर से मुम्बई में कदम रखा। उसने ब्लाउज सिलने का काम शुरू कर दिया।

उन दिनों एक ब्लाउज सिलने के उसे २ रुपये मिलते थे। दिन रात मेहनत करने का संकल्प तो था पर अभी परीक्षाएँ भी बाकी थीं। पिता की नौकरी छूट जाने से सारा परिवार कल्पना के पास मुम्बई आ गया। अब कल्पना ने १६-१६ घंटे काम करना शुरू कर दिया। इसी दौरान कल्पना की सबसे छोटी बहिन बीमार पड़ी तथा पैसों के अभाव में समुचित इलाज न मिल पाने के कारण उसका देहांत हो गया। कल्पना के कानों में उसकी चीख गूँजती रहती थी कि दीदी मैं मरना नहीं चाहती मुझे बचालो। कल्पना ने निश्चय किया कि दुनिया में जीना है तो पैसा कमाना है। उसने दलितों को मिलने वाले कर्ज की जानकारी प्राप्त करनी प्रारम्भ कर दी। ज्योतिबा फुले के नाम पर प्रारम्भ की गयी एक सरकारी योजना के तहत उसने ५०००० का कर्ज लेकर फर्नीचर का व्यवसाय प्रारम्भ किया जिसमें काफी महंगे फर्नीचर की हूबहू कॉपी कर कल्पना बेचती थी। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि अपनी भीषण विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कल्पना में दूसरों की सहायता करने का भाव प्रारम्भ से था। उसने अन्य गरीबों को सरकारी कर्ज की योजनाओं के बारे में बताना प्रारम्भ कर दिया। ताकि वे भी अपनी जिन्दगी सँवार सकें। कल्पना की गाड़ी अब पटरी पर आने लगी थी। उन्होंने दूसरा विवाह भी किया जिससे दो संतान भी हुयीं। पर पति की मृत्यु हो गयी।

**'जब आप किसी पहाड़ के शिखर तक पहुँचने के लिए निकलेंगे तो रास्ते में पत्थर, काँटे सब लगेंगे। बहुत सारे लोग बीच में ही हार मानकर लौट जाते हैं, मैं हार नहीं मानती और आगे बढ़ती रहती हूँ।' - कल्पना सरोज**

इन्हीं दिनों व्यापार का एक सुन्दर परन्तु कठिन अवसर इनके समक्ष आया। एक जमीन जो कानूनी झमेले में पड़ी थी उसे मालिक जरूरत के कारण काफी कम कीमत में बेचना चाहता था। यह जमीन कल्पना ने खरीद ली। अब कोर्ट के चक्कर शुरू हो गए। एक लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद अंततोगत्वा कल्पना ने यह लड़ाई जीती। अब इस पर बिल्डिंग बनाने हेतु धन चाहिए था जो कल्पना के पास नहीं था। तब उन्होंने पार्टनरशिप में बिल्डिंग बनायी। उस बिल्डिंग को बेचने से कल्पना को काफी लाभ मिला। अब कल्पना एक सफल व कुशल व्यापारी के रूप में जाने जाने लगीं थी। कल्पना के जीवन में असली मोड़ तब आया जब उन्होंने कमानी ट्यूब की कमान संभाली।

कमानी ट्यूब की स्थापना राम जी भाई ने की थी। कहते हैं कि इसके पीछे गांधी जी की प्रेरणा थी। राम जी भाई ने स्वतन्त्र भारत को औद्योगिक क्षेत्र में ऊँचाइयों तक पहुँचाने का स्वप्न देखा था। जब तक वे जीवित थे तब तक सब ठीक ठाक चलता रहा पर १९६६ में उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके वारिसों के बीच में झगड़े के कारण कम्पनी दिवालिया होने की कगार पर पहुँच गयी। १९८५ में कम्पनी ने उत्पादन बंद कर दिया। ६०० कर्मचारियों के जीवन यापन का प्रश्न था। झगड़ा उच्चतम न्यायालय में पहले से ही था। ९० प्रतिशत शेयर बेचने का फैसला भी कामयाब न हो सका। तब देश में अपनी तरह का प्रथम प्रयोग किया गया। कर्मचारी यूनियन के आवेदन पर कम्पनी उनको सौंप दी गयी। हर प्रकार की आर्थिक सहायता अधिकतम दी जाय ऐसे निर्देश भी दिए गए। पर कम्पनी चलाये कौन? सभी मालिक थे। आपस के झगड़े अलग। यह प्रयोग बुरी तरह असफल रहा। १९९५ में कमानी ट्यूब फिर बंद हो गयी। बिल न चुका पाने के कारण १९९७ में बिजली-पानी के कनेक्शन काट दिए गए। कम्पनी के ऊपर वित्तीय संस्थाओं का ११६ करोड़ का कर्जा था। कोई इस कम्पनी को टेक ओवर करने की रिस्क नहीं लेना चाहता था। ऐसे में कल्पना ने यह रिस्क ली। २००० में कल्पना ने ६०० मजदूरों के भरण पोषण की चिंता करते हुए बी.ऍफ.आई. आर में कम्पनी के लिए आवेदन किया, बोर्ड ने कल्पना को कम्पनी का प्रेसीडेंट बना दिया। कल्पना सभी कर्जदाता वित्तीय संस्थानों से मिली और उन्हें सहमत किया कि वे मूल की चिंता करें और ब्याज माफ कर दें। अब ११६ करोड़ की कर्ज के रकम ५५ करोड़ रह गयी। इसके बाद हुयी दस वर्षों की लम्बी जद्दोजहद। उसमें जिस धैर्य व बुद्धिमत्ता के साथ कल्पना ने काम क्या वह अपने आप में एक मिसाल है। आज वे व्यापार जगत् में सफलता की गारंटी मानी जाती हैं। उनके व्यक्तित्व को मान्यता प्रदान करने हेतु उन्हें २०१३ में पद्मश्री से अलंकृत किया गया। कल्पना सरोज ने यह सिद्ध कर दिया कि पूरी ईमानदारी तथा लगन से काम किया जाय तो आपकी पृष्ठभूमि, आपका अतीत, आपका महिला होना, कुछ भी बाधक नहीं बनता। कल्पना सरोज का जीवन आने वाली पीढ़ी के लिए एक मिसाल है।

- अशोक आर्य

# समाचार

## गुरु विरजानन्द पब्लिक स्कूल कोटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरु विरजानन्द शिक्षा समिति, कोटा के द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। समिति के महामंत्री क्षेत्रपाल सिंह कुशवाह ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि विद्यालय के रोझडी कोटा स्थित स्कूल परिसर में मुख्य समारोह का आयोजन किया गया।

वार्षिकोत्सव समारोह के उद्घाटन के अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि पुरातत्वविद् ओम प्रकाश शर्मा ने कहा कि अपने गौरवशाली इतिहास पर गर्व करने से ही संस्कृति जीवित रहती है। सभ्यता विकसित होती चली जाती है। छात्र-छात्राओं को इतिहास से अवश्य अवगत करायें। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि आर्यसमाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने संबोधन में कहा कि यह विद्यालय अन्य सभी विद्यालयों से विशिष्ट है क्योंकि इसमें शिक्षा के साथ-साथ वैदिक सिद्धांतों एवं संस्कारों का ज्ञान दिया जाता है। ये सभी आधुनिक विद्यालयों के लिए भी अनुकरणीय है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्थानीय पार्षद श्रीमती पारस कंवर ने कहा कि विद्यालय के छात्र-छात्राओं की उपलब्धियाँ सराहनीय हैं।

- अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव

## मन्त्र पाठ प्रतियोगिता-२०१७ सम्पन्न

प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि जगाने के उद्देश्य से सुरेशचन्द्र गुप्ता चौरिटेबल ट्रस्ट एवं आर्यसमाज हिरणमगरी के संयुक्त तत्त्वाधान में वेदमन्त्र पाठप्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक ३०-१-२०१७ को ६.३० बजे कनिष्ठ वर्ग एवं वरिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिता आर्यसमाज हिरणमगरी, सेक्टर-४ में आयोजित की गयी। इसमें ३३ विद्यालयों के कुल ६४ विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के परिणाम निम्नानुसार रहे-

कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान सुश्री दिया चपलोत, सीडलिंग मॉडल स्कूल व द्वितीय सुश्री पाखुशी यादव एम. डी. एस.पब्लिक स्कूल रहीं। वहीं वरिष्ठ वर्ग में प्रथम सुश्री साक्षी वैष्णव केन्द्रीय विद्यालय न. १, प्रतापनगर द्वितीय सुश्री विपाशा जैन सेंट एंथोनी स्कूल रहीं। चल वैजयन्ती वरिष्ठ वर्ग में सेंट एंथोनी पब्लिक स्कूल से.४ व कनिष्ठ वर्ग में सीडलिंग मॉडल स्कूल ने प्राप्त की।

प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर श्री नरेशचन्द्र बंसल, सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता हिंदुस्तान जिंक, पर्यावरणविद् एवं समाजसेवी, निर्णायक वृन्द में श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर प्रो. डॉ. बिहारी लाल जैन, सु.वि.वि के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं श्री सत्यप्रिय शास्त्री, शिक्षाविद् व मंत्री आर्य समाज पिछोली थे। स्वागत श्रीमती ललिता मेहरा ने, संचालन श्रीमती प्रेमलता मेनारिया ने व धन्यवाद मुख्य न्यासी श्रीमती शारदा गुप्ता ने ज्ञापित किया।

- शारदागुप्ता, मुख्य न्यासी, सुरेशचन्द्र गुप्ता चौरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

## आर्य समाज, हिरन मगरी द्वारा रविवारीय संस्कार शाला का आरम्भ

आर्य समाज, हिरन मगरी द्वारा रविवारीय संस्कार शाला आरम्भ की गई। विद्यार्थियों ने उत्साह से भाग लेते हुए ध्यान, योगाभ्यास, प्रेरक कहानी और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के गुर सीखे। भूपेंद्र शर्मा ने ईश्वर के मुख्य नाम ओम का जप करवाकर गायत्री मंत्र से ईश्वर का ध्यान करवाया। श्रीमती ललिता मेहरा ने लम्बाई बढ़ाने के योगासन एवं प्रेरक कहानी सुनाई। श्रीमती सरला गुप्ता ने रोचक खेलों द्वारा बच्चों को संस्कारवान बनाने हेतु प्रेरित किया। बच्चों को स्वयं का परिचय कैसे देना चाहिए, इसका रचनात्मक प्रशिक्षण दिया गया। २५ विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया। यह संस्कार शाला प्रत्येक रविवार को प्रातः १०.३० से ११.३० आर्य समाज हिरनमगरी में निःशुल्क चलेगी। कक्षा ३ से १२ का कोई भी विद्यार्थी इसमें भाग ले सकता है।

- ललिता मेहरा, मंत्री

## १७वाँ आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में १७वाँ आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन २२ जनवरी २०१७ को अशोक विहार-१ में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

सर्वश्री सत्यपाल आर्य, अजय सहगल, धर्मपाल आर्य, श्रीमती वीना आर्या, हर्षप्रिय आर्य, श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती आरती आर्या व विनय आर्य का पटका, राजस्थानी पगड़ी व शॉल पहना कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रेम सचदेवा प्रधान आर्य समाज अशोक विहार-१ ने की।

श्री विनय आर्य ने बताया कि 'आर्यसमाज की वेवसाईट में मैट्रीमोनी के अन्तर्गत आशातीत रजिस्ट्रेशन हो रहे हैं जिसके माध्यम से आर्य परिवारों में अनेक रिश्ते तय हुए हैं। अभी हाल ही में दो शादियाँ दिल्ली में जनवरी माह में होने वाली हैं जिनके रिश्ते पिछले आर्यपरिचय सम्मेलन के दौरान तय हुए थे।'

कार्यक्रम का संचालन श्री हर्षप्रिय आर्य, श्रीमती विभा आर्या एवं श्रीमती वीना आर्या जी द्वारा बड़े ही सहज रूप से किया गया। सम्मेलन में लगभग ३२ परिवारों ने आपसी बातचीत कर रिश्तों की बात को आगे बढ़ाने के लिए आपस में चर्चा की।

## आर्य समाज मंदिर, बीकानेर के पुनर्निर्माण का शिलान्यास

आर्य समाज मंदिर, बीकानेर के पुनर्निर्माण का शिलान्यास प्रसिद्ध आर्य संन्यासी और सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के करकमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर बीकानेर के महापौर श्री नारायण चौपड़ा और आर्य समाज के पदाधिकारी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द ने महर्षि दयानन्द के योगदान व उनके वेदोद्धारक स्वरूप की चर्चा की।

- महेश सोनी, प्रधान

# हलचल

## जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा नागौर द्वारा वेद प्रचार

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा नागौर द्वारा वेद प्रचार दिनांक २५ जनवरी से २८ फरवरी १७ तक जनपद के विभिन्न नगरों व गाँवों में किया गया। इस अवसर पर कुँवर भूपेन्द्र सिंह, अलीगढ़ व श्री लेखराज शर्मा भरतपुर द्वारा जहाँ भजनों के द्वारा लोगों को मंत्रमुग्ध किया गया वहीं श्री यशमुनि वानप्रस्थी व जिला प्रधान श्री किशनाराम आर्य के उद्‌बोधन भी हुए।

## आर्य समाज कुन्हाड़ी कोटा द्वारा संगीतमय रामकथा

दिनांक ६ से १५ जनवरी २०१७ तक आर्य समाज कुन्हाड़ी द्वारा सात दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य शिवदत्त पाण्डेय, गुरुकुल

धनपतगंज सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश के ब्रह्मत्व में सम्पन्न कराया गया इस अवसर पर पंडित दिनेश दत्त आर्य एवं उनकी संगीत मंडली द्वारा वाल्मिकी रामायण पर आधारित संगीतमय रामकथा की प्रस्तुति भी सराहनीय रही। इस अवसर पर श्री राजेन्द्र सक्सेना, रानी बहिन जी, श्री उदय प्रकाश अस्थाना, श्री राधा वल्लभ राठौड़, श्री प्रेमसिंह परिहार, श्री राम नारायण कुशवाह, श्री जी.सी. गुप्ता, श्री देवी शंकर शर्मा, श्री सत्यप्रकाश गुप्ता व श्री रामजी लाल बैरवा का सम्मान किया गया।

– पी.सी.मित्तल, प्रधान, आर्य समाज, कुन्हाड़ी

## दयानन्दधाम, ईसवाल, उदयपुर में ऋषि-जयन्ती मनायी गयी

१२ फरवरी रविवार को नगर के आर्यजनों ने उदयपुर से २२कि.मी.

दूर दयानन्द धाम ईसवाल में ऋषि दयानन्द का जन्मदिन धूमधाम से मनाया। सर्वप्रथम श्री नवनीत आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ, तत्पश्चात न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने महर्षि दयानन्द के जीवन के मार्मिक प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए श्रद्धापूर्वक उनके बताए रास्ते का अवलंबन करने का आह्वान किया। श्री विनोद राठौड़ ने ऋषि महिमा का सुन्दर गीत गाया। तत्पश्चात् विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें सभी उपस्थित आबाल-वृद्ध-महिलाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। क्रिकेट, चम्मचरेस, कुर्सी दौड़ प्रतियोगिताओं में क्रमशः स्वामी श्रद्धानन्द टीम, सूर्य प्रकाश चौहान, श्रीमती संजीवनी, राखी जैन व सितोलिया में धर्मनिष्ठा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अंत में सभी आर्यजनों का सहभोज हुआ।

– सुरेश पाटोदी, व्यवस्थापक-न्यास

# प्रतिस्वर

## चावल खाने वाले मित्र की खोज

सत्यार्थ सौरभ दिसम्बर के अंक पृष्ठ १८ पर 'जो मेरे चावल खा जाये ऐसा मित्र कहाँ से लाऊँ' पहेली है या दोहरा समाधान। कृष्ण सुदामा के चित्र साथ प्रकाशित कर बड़े अच्छे ढंग से प्रेरणा भरी है आपने। आगे की पंक्ति में पुनः नया समाधान जो कर्ण और कृष्ण के सदृश परछाईं बनने वाली श्रीमती जी की सहृदयता को उपस्थित कर 'नया जमाना और पुराना दोनों जरा मिलाना' सार्थक एवं उत्प्रेरक कर दिया है। सखे सप्तपदी भव..... कहे वे किसके लिये?
इस नई सोच के लिये अनाम कलमकार को धन्यवाद।

– सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'आर्य समाज नेमदारगंज (नवादा-बिहार)

## आर्य समाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर के चुनाव सम्पन्न

श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली (चुनाव अधिकारी) के द्वारा आर्य समाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर के चुनाव सम्पन्न कराये गए। जिसमें क्रमशः सर्वश्री

ओमप्रकाश वर्मा, कमलेश शर्मा, हनुमान सहाय शर्मा प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष चुने गए। सभी अधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

## सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (राज.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर (हरि.), श्री पृथ्वीवल्लभ देव सोलंकी; उज्जैन (म.प्र.), श्री रमेश आर्य; दीनानगर (पंजाब), श्री अच्च्युता डी. हरकाल; अहमदनगर (महाराष्ट्र), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; साबरकांठा (गुजरात), श्री बीरेन्द्र कर; भुवनेश्वर (उड़िसा), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री मुकेश पाठक; उदयपुर (राज.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झँवर; आष्टा (म. प्र.), श्री अमीत शर्मा; झुन्झुनु (राज.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

**ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १६ पर अवश्य पढ़ें।**

# आयुर्वेद और स्वास्थ्य

आयुर्वेद में स्वस्थ व्यक्ति की परिभाषा इस प्रकार बताई है-

**समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियाः।**
**प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।**

जिस व्यक्ति के दोष (वात, कफ और पित्त) समान हों, अग्नि सम हो, सात धातुयें भी सम हों, तथा मल भी सम हो, शरीर की सभी क्रियायें समान क्रिया करें, इसके अलावा मन, सभी इंद्रियाँ तथा आत्मा प्रसन्न हो, वह मनुष्य स्वस्थ कहलाता है। यहाँ 'सम' का अर्थ 'संतुलित' ( न बहुत अधिक न बहुत कम) है।

स्वास्थ्य की आयुर्वेद सम्मत अवधारणा बहुत व्यापक है। आयुर्वेद में स्वास्थ्य की अवस्था को प्रकृति (प्रकृति अथवा मानवीय गठन में प्राकृतिक सामंजस्य) और अस्वास्थ्य या रोग की अवस्था को विकृति (प्राकृतिक सामंजस्य से बिगाड़) कहा जाता है। चिकित्सक का कार्य रोगात्मक चक्र में हस्तक्षेप करके प्राकृतिक सन्तुलन को कायम करना और उचित आहार और औषधि की सहायता से स्वास्थ्य प्रक्रिया को दुबारा शुरू करना है। औषधि का कार्य खोए हुए सन्तुलन को फिर से प्राप्त करने के लिए प्रकृति की सहायता करना है। आयुर्वेदिक मनीषियों के अनुसार उपचार स्वयं प्रकृति से प्रभावित होता है, चिकित्सक और औषधि इस प्रक्रिया में सहायता-भर करते हैं।

स्वास्थ्य के नियम आधारभूत ब्रह्माण्डीय एकता पर निर्भर है। ब्रह्मांड एक सक्रिय इकाई है, जहाँ प्रत्येक वस्तु निरन्तर परिवर्तित होती रहती है। कुछ भी अकारण और अकस्मात् नहीं होता और प्रत्येक कार्य का प्रयोजन और उद्देश्य हुआ करता है। स्वास्थ्य को व्यक्ति के स्व और उसके परिवेश से तालमेल के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विकृति या रोग होने का कारण व्यक्ति के स्व का ब्रह्माण्ड के नियमों से ताल-मेल न होना है।

आयुर्वेद का कर्तव्य है, देह का प्राकृतिक सन्तुलन बनाए रखना और शेष विश्व से उसका ताल-मेल बनाना। रोग की अवस्था में, इसका कर्तव्य उपतन्त्रों के विकास को रोकने के लिए शीघ्र हस्तक्षेप करना और देह के सन्तुलन को पुनः संचित करना है। प्रारम्भिक अवस्था में रोग सम्बन्धी तत्त्व अस्थायी होते हैं और साधारण अभ्यास से प्राकृतिक सन्तुलन को फिर से कायम किया जा सकता है।

यह सम्भव है कि आप स्वयं को स्वस्थ समझते हों, क्योंकि आपका शारीरिक रचनातन्त्र ठीक ढंग से कार्य करता है, फिर भी आप विकृति की अवस्था में हो सकते हैं अगर आप असन्तुष्ट हों, शीघ्र क्रोधित हो जाते हों, चिड़चिड़ापन या बेचैनी महसूस करते हों, गहरी नींद न ले पाते हों, आसानी से फारिग न हो पाते हों, उबासियाँ बहुत आती हों, या लगातार हिचकियाँ आती हों, इत्यादि।

स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में पंचमहाभूत, आयु, बल एवं प्रकृति के अनुसार योग्य मात्रा में रहते हैं। इससे पाचनक्रिया ठीक प्रकार से कार्य करती है। आहार का पाचन होता है और रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र इन सातों धातुओं का निर्माण ठीक प्रकार से होता है। इससे मल, मूत्र और

स्वेद का निर्हरण भी ठीक प्रकार से होता है।

स्वास्थ्य की रक्षा करने के उपाय बताते हुए आयुर्वेद कहता है-

**त्रय उपस्तम्भाः आहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति।**

- चरक संहितासूत्र. ११/३५

अर्थात् शरीर और स्वास्थ्य को स्थिर, सुदृढ़ और उत्तम बनाये रखने के लिए आहार, स्वप्न (निद्रा) और ब्रह्मचर्य- ये तीन उपस्तम्भ हैं। 'उप' यानी सहायक और 'स्तम्भ' यानी खम्भा। इन तीनों उप स्तम्भों का यथाविधि सेवन करने से ही शरीर और स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

इसी के साथ शरीर को बीमार करने वाले कारणों की भी चर्चा की गई है यथा-

**धी धृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्मयत् कुरुतऽशुभम्।**
**प्रज्ञापराधंतं विद्यातं सर्वदोषप्रकोपणम्।।**

- चरक संहिताय शरीर. १/१०२

अर्थात् धी (बुद्धि), धृति (धारण करने की क्रिया, गुण या शक्ति धैर्य) और स्मृति (स्मरण शक्ति) के भ्रष्ट हो जाने पर मनुष्य जब अशुभ कर्म करता है तब सभी शारीरिक और मानसिक दोष प्रकुपित हो जाते हैं। इन अशुभकर्मों को प्रज्ञापराध कहा जाता है। जो प्रज्ञापराध करेगा उसके शरीर और स्वास्थ्य की हानि होगी और वह रोगग्रस्त हो ही जाएगा।

साभार - विकीपीडिया

# बदलाव

जिन्दगी में बहुत सारे अवसर ऐसे आते हैं जब हम बुरे हालात का सामना कर रहे होते हैं और सोचते हैं कि क्या किया जा सकता है। क्योंकि इतनी जल्दी तो सब कुछ बदलना संभव नहीं है और क्या पता मेरा ये छोटा सा बदलाव कुछ क्रांति लेकर आएगा या नहीं। लेकिन मैं आपको बता दूँ हर चीज या बदलाव की शुरुआत बहुत ही basic ढंग से होती है। कई बार तो सफलता हमसे बस थोड़े ही कदम दूर होती है कि हम हार मान लेते हैं। जबकि अपनी क्षमताओं पर भरोसा रख कर किया जाने वाला कोई भी बदलाव छोटा नहीं होता और वो हमारी जिन्दगी में एक नींव का पत्थर भी साबित हो सकता है।

चलिए एक कहानी पढ़ते हैं इसके द्वारा समझने में आसानी होगी कि छोटा बदलाव किस कदर महत्वपूर्ण है-

एक लड़का सुबह-सुबह दौड़ने को जाया करता था। आते-जाते वो एक बूढ़ी महिला को देखता था। वो बूढ़ी महिला तालाब के किनारे छोटे-छोटे कछुवों की पीठ को साफ किया करती थी। एक दिन उसने इसके पीछे का कारण जानने की सोची।

वो लड़का महिला के पास गया और उनका अभिवादन कर बोला 'नमस्ते आंटी! मैं आपको हमेशा इन कछुवों की पीठ को साफ करते हुए देखता हूँ आप ऐसा किस वजह से करते हो?' महिला ने उस मासूम से लड़के को देखा और इस पर लड़के को जवाब दिया 'मैं हर रविवार यहाँ आती हूँ और इन छोटे-छोटे कछुवों की पीठ साफ करते हुए सुख शान्ति का अनुभव लेती हूँ।' क्योंकि इनकी पीठ पर जो कवच होता है उस पर कचरा जमा हो जाने की वजह से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है इसलिए ये कछुवे तैरने में मुश्किल का सामना करते हैं। कुछ समय बाद तक अगर ऐसा ही रहे तो ये कवच भी कमजोर हो जाते हैं इसलिए कवच को साफ करती हूँ।

यह सुनकर लड़का बड़ा हैरान था। उसने फिर एक जाना पहचाना सा सवाल किया और बोला 'बेशक आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं लेकिन फिर भी आंटी एक बात सोचिये कि इन जैसे कितने कछुवे हैं जो इनसे भी बुरी हालत में हैं जबकि आप सभी के लिए ये नहीं कर सकते तो उनका क्या क्योंकि आपके अकेले के बदलने से तो कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा न।

महिला ने बड़ा ही संक्षिप्त लेकिन असरदार जवाब दिया कि भले ही मेरे इस कर्म से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा लेकिन सोचो इस एक कछुवे की जिन्दगी में तो बदलाव आयेगा ही न। तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरुआत करें।

साभार- अन्तर्जाल

# राजा की दिनचर्या

राजा के महत्व और उसके दायित्वों को ध्यान में रखते हुए ही राजा को धार्मिकता से परिपूर्ण होने पर बल दिया गया है और इसलिए महर्षि जी मनु महाराज का उल्लेख करते हुए उसकी दिनचर्या का संकेत भी देते हैं।

उत्थाय पश्चिमे यामे कृतशौचः समाहितः।
हुताग्निर्ब्राह्मणांश्चार्च्य प्रविशेत्स शुभासभाम्॥ - मनु. ७/१४५

इसका भाव इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं- 'जब पिछली प्रहर रात्रि रहे तब उठ, शौच और सावधान होकर परमेश्वर का ध्यान, अग्निहोत्र, धार्मिक विद्वानों का सत्कार और भोजन करके भीतर सभा में प्रवेश करे। वहाँ खड़ा रहकर जो प्रजाजन उपस्थित हों उनको मान्य दे और उनको छोड़कर मुख्यमंत्री के साथ राजव्यवस्था का विचार करे। पश्चात् उसके साथ घूमने को चला जाए। पर्वत के शिखर अथवा एकान्त घर वा जंगल जिसमें एक शलाका भी न हो, वैसे एकान्त स्थान में बैठकर विरुद्ध भावना को छोड़ मंत्री के साथ विचार करे। जिस राजा के गूढ़ विचार को अन्य जन मिलकर न जान सकते, अर्थात् जिसका विचार गंभीर, शुद्ध परोपकारार्थ सदा गुप्त रहे, वह धनहीन भी राजा सब पृथ्वी के राज्य करने में समर्थ होता है इसलिए अपने मन से एक भी कार्य न करे कि जब तक सभासदों की अनुमति न हो।'

## मन्त्रियों की योग्यता व नियुक्ति

महर्षि दयानन्द जी ने छठे समुल्लास में मनु महाराज का उल्लेख करते हुए कहा है-

मौलाञ्छास्त्रविदः शूराँल्लब्धलक्षान्कुलोद्भगवान्।
सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्॥ - मनु. ७/५४

अर्थात् स्वदेश, स्वराज्य में उत्पन्न, वेदादि शास्त्रों के ज्ञाता, शूरवीर, जिनका लक्ष्य निष्फल न हो और कुलीन, सुपरीक्षित सात या आठ उत्तम, धार्मिक, चतुर मन्त्री करे। (यहाँ स्वदेश में उत्पन्न हो यह बात विशेष है।) यदि जरूरत हो तो राजा को यह अधिकार दिया गया है कि वह अधिक भी मंत्री नियुक्त कर सकता है-

अन्यानपि प्रकुर्वीत शुचीन्प्राज्ञानवस्थितान्।
सम्यगर्थसमाहर्तॄ नमात्यान्सुपरीक्षितान्॥
निवर्त्तेतास्य यावद्भिरितिकर्त्तव्यता नृभिः।
तावतोऽतन्द्रितान्दक्षान्प्रकुर्वीत विचक्षणान्॥ - मनु. ७/६०, ६१

अन्य भी पवित्रात्मा, बुद्धिमान, निश्चित बुद्धि, पदार्थों के संग्रह करने में अति चतुर सुपरीक्षित मंत्री करे। जितने मनुष्यों से राजकार्य हो सके उतने आलस्य रहित, बलवान, बड़े-बड़े चतुर प्रधान पुरुषों को राजा अधिकारी नियुक्त करे। इस प्रकार जितने व्यक्तियों की राज्य को सुचारू रूप से चलाने की आवश्यकता हो उतने मंत्री आदि नियुक्त किये जा सकते है। बृहस्पति के अनुसार सोलह मंत्री होने चाहिए, उशना नामक विद्वान् का कहना है कि बीस होने चाहिए मगर चाणक्य जी का कथन है कि मन्त्रियों की संख्या निश्चित नहीं होनी चाहिए। जरूरत के अनुसार उन्हें घटाया वा बढ़ाया जा सकता है। इन अधिकारियों की योग्यता के बारे में याज्ञवल्क्य जी कहते हैं-

श्रुताध्ययनसंपन्नाः धर्मज्ञाः सत्सवादिनः।
राज्ञः सभासदः कार्यारिपी मित्रे च ये समाः॥

अर्थात् वे वेदादि विद्याओं से युक्त हों, धर्म के जानने वाले हों, सत्यवादी हों और सबसे बढ़कर शत्रु और मित्र से एक समान वर्ताव करने वाले हों। कात्यायन का कथन है-

स तु सभ्यैः स्थिरैर्युक्तः प्राज्ञैभीले द्विजोतमैः।
धर्म शास्त्रार्थ कुशलैरर्थशास्त्र विशारदैः।

अर्थात् ये समस्त अधिकारी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों में से ऐसे पुरुष चुने जाने चाहिये जो कभी किसी से डरने वाले न हों, बुद्धिमान हों, कुलीन हों और धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में पारंगत हों।

ध्यान रहे यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य से अभिप्राय जन्मगत् जाति से न होकर वर्ण से है जिसका चयन योग्यता गुण कर्म, स्वभाव अनुसार होता है।

सम्पादक- अशोक आर्य

### वेदों में चिकित्सा विज्ञान

वैदिक मिशन, मुम्बई के तत्वावधान में दिनांक १८ व १९ मार्च को 'वेदों में चिकित्सा विज्ञान' विषय पर आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई में संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विशिष्ठ अतिथि के रूप में स्वामी आर्यवेश जी, राजस्थान के लोकायुक्त माननीय सज्जनसिंह कोठारी जी, स्वामी व्रतानन्द जी (उड़ीसा), बाबू मिठाई लाल सिंह जी, अरुण अब्रोल जी (मुम्बई), श्री ओमप्रकाश मस्करा जी (कोलकाता), ठाकुर विक्रम सिंह जी (दिल्ली) आदि पधार रहे हैं। संगोष्ठी में अनेक रोगों के संदर्भ में चर्चा होगी। - सन्दीप आर्य

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

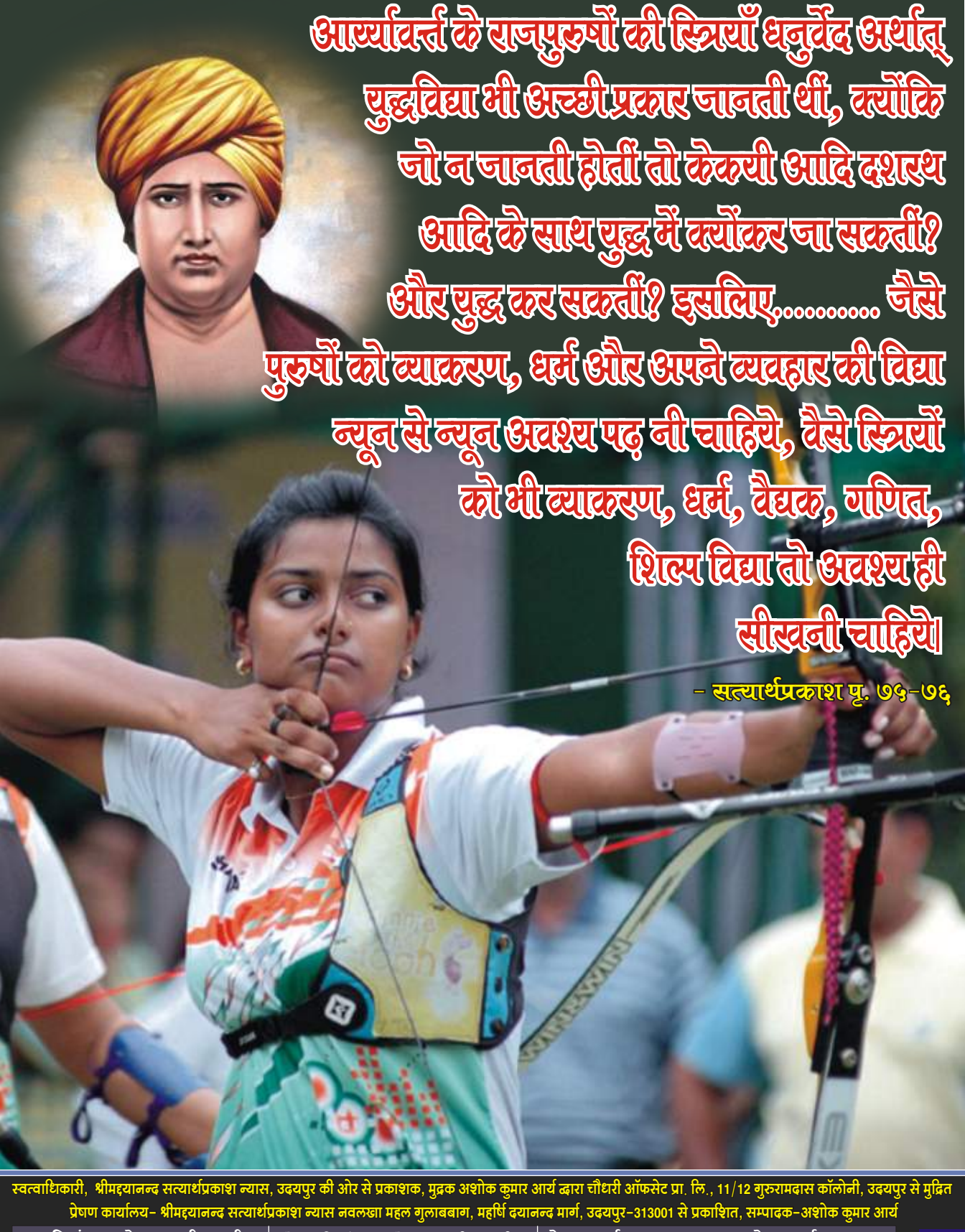

आर्य्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियाँ धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं, क्योंकि जो न जानती होतीं तो केकयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकतीं? और युद्ध कर सकतीं? इसलिए..... जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़ नी चाहिये, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिये।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ७५-७६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर